SACHCHA RAHI • ISSN 2582-4007 • VOL 23 • ISSUE 03 • MAY 2024

हिन्दी मासिक

मई 2024

सच्चा राही

लखनऊ

सामाजिक एवं साहित्यिक

देश में नार्मल हालात पैदा कीजिए !

देश में सबसे पहले करने का काम यह है कि नार्मल हालात हों, आदमी को आदमी का भरोसा हो, और आदमी को अपनी ज़िन्दगी का भरोसा हो कि अभी वह रहेगा, अभी मेहनत कर सकता है उसे कुछ करना चाहिए, उसको हाथ पाँव मारना चाहिए अपने लिए भी और अपने बच्चों के लिए भी। इसके लिए ज़रूरत है देश में नार्मल हालात बाक़ी रहें और अम्नो अमान बाक़ी रहे, देश की वास्तविक उन्नति और विकास, देश की शान्ति और अम्नो अमान पर निर्भर है।

हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (रह.)

एक प्रति ₹ 30/=

वार्षिक ₹ 300/=

सरपरस्त
हज़रत मौलाना सै0 बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी
नाज़िम नदवतुल उलमा, लखनऊ

सम्पादक
मु0 गुफ़रान नदवी
उप सम्पादक
जमाल अहमद नदवी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही
पोस्ट बॉक्स नं0 93
नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग,
लखनऊ – 226007
☎ 0522–2740406 (8:00 am to 1:00 pm)
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com
http://sachcha-rahi.nadwa.in/
www.nadwatululema.org

सहयोग राशि

एक प्रति	₹ 30/-
वार्षिक	₹ 300/-
विदेशों में (वार्षिक)	50 युएस. डॉलर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें
SACCHA RAHI

SACCHA RAHI
A/c. No. 10863759642
IFS Code: SBIN0000125
Swift Code: SBINNB157
State Bank of India,
Main Branch, Lucknow.

कृप्या पैसा जमा करने के बाद दफ़्तर के फोन नम्बर अथवा ई–मेल पर खरीदारी नम्बर के साथ अवश्य सूचित करें।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक लखनऊ
SACHCHA RAHI.ISSN 2582-4007
मई 2024 वर्ष 23 अंक 03

शहादत की तमन्ना

शहीदों की दुन्या बड़ी है अ़जीब
वह जन्नत में रहते नहीं हैं ग़रीब
परिन्दों की शक्लें मिली हैं उन्हें
जहाँ चाहें जन्नत में खायें पियें
नहीं उनको रंज और नहीं उनको ग़म
मुकम्मल है राहत नहीं है अ़लम
वह ज़िन्दा हैं उनको न मुर्दा कहो
वह मुर्दा नहीं उनको ज़िन्दा कहो
शहादत की दौलत बहुत है बड़ी
तमन्ना नबी ने शहादत की की
नबी पर पढ़ें हम दुरूदो सलाम
रहे उनपे रहमत ख़ुदा की मुदाम
सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम

आपके पते के साथ जो खरीदारी नम्बर है अगर उसके नीचे लाल या काली लाइन है तो समझें कि आपका सालाना चन्दा ख़त्म हो चुका है। अतः आप जल्द ही अपना चन्दा भेजने का कष्ट करें। आप अपना पैसा दिये गये बैंक खाते में भी जमा कर सकते हैं। अथवा मनीआर्डर से भी भेज सकते हैं। मनीआर्डर के कूपन पर अपने खरीदारी नम्बर के साथ मोबाइल नम्बर अवश्य लिखें।

मुद्रक एवं प्रकाशक मोहम्मद ताहा अतहर द्वारा काकोरी आफसेट प्रिंटिंग प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर सच्चा राही नदवतुल उलमा, टैगोर मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित।
Designing & Composing by: Qamaruzzama-8318047804

विषय एक दृष्टि में

कुरआन की शिक्षा	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	05
प्यारे नबी की प्यारी बातें	मौलाना हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0	07
मदरसा, मुस्लिम समाज	मुहम्मद गुफ़रान नदवी	08
इस्लामी अक़ीदे	मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी	10
इन्सान, कुरआन की नज़र में	हज़रत मौ0 सै0 मु0 राबे हसनी नदवी रह0	11
भारत के अतीत में मुस्लिम	सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान	13
मित्रता तथा शत्रुता	मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी	16
वोट के इस्लामिक निर्देश	मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी	18
अपने जीवन में माता–पिता का	मुहम्मद नफीस	20
दुआ क्या है?	इं0 जावेद इक़बाल	25
आपके प्रश्नों के उत्तर	मुफ़्ती मुहम्मद ज़फ़र आलम नदवी	28
रहम	नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी	31
औरतें आर्थिक सरगर्मियों में	डॉ0 मुहियुद्दीन ग़ाज़ी	32
घरेलू मसायल	मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली	35
गर्मी का मौसम	मोलवी इस्माईल मेरठी	36
राष्ट्र पिता गाँधी जी	इदारा	37
स्वास्थ्य	इदारा	39
अंतर्राष्ट्रीय समाचार	अबू मोहम्मद आमिर नदवी	41
अहले ख़ैर हज़रात से	इदारा	42

कुरआन की शिक्षा

मौलाना बिलाल अ़ब्दुल ह़ई हसनी नदवी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूर-ए-यूसुफ़:-

अनुवादः—

उन्होंने कहा कि क्या मैं उसी तरह उनके बारे में तुम पर भरोसा कर लूं जैसा पहले उनके भाई के बारे में मैंने तुम पर भरोसा किया था बस अल्लाह ही बेहतर रक्षा करने वाला है और वह सबसे अधिक दयालु है(64) और जब उन्होंने सामान खोला तो अपनी पूंजी भी मौजूद पायी जो उनको वापस कर दी गई थी, बोले ऐ पिता जी! और हमें क्या चाहिए? यह हमारी पूंजी हम ही को वापस कर दी गई, हम और अनाज ले आएंगे और अपने भाई की रक्षा करेंगे और एक ऊँट का अनाज अधिक पायेंगे, यह अनाज तो आसान है(65) उन्होंने कहा कि मैं उनको तुम्हारे साथ उस समय तक हरगिज़ नहीं भेज सकता जब तक तुम अल्लाह की ओर से मुझे यह वचन न दे दो कि तुम उनको वापस ज़रूर लाओगे सिवाय इसके कि तुम किसी कठिनाई में घिर जाओ फिर जब उन्होंने उनको वचन दे दिया तो उन्होंने कहा कि जो बातें हम कहते हैं वह अल्लाह ही के हवाले हैं[1](66) और उन्होंने कहा कि ऐ बेटो! एक दरवाज़े से मत प्रवेश करना बल्कि विभिन्न दरवाजों से प्रवेश करना और मैं अल्लाह से तुम्हें कुछ भी नहीं बचा सकता, अधिकार अल्लाह ही का है, मैंने उसी पर भरोसा किया और उसी पर भरोसा करने वालों को भरोसा करना चाहिए(67) और जब उन्होंने अपने पिता के बताए हुए तरीके के अनुसार प्रवेश किया, वह अल्लाह से उनको थोड़ा भी बचा नहीं सकते थे हाँ याकूब के दिल में एक इच्छा थी जो उन्होंने पूरी की और वे हमारे सिखाने से ज्ञान वाले थे, लेकिन अधिकतर लोग ज्ञान नहीं रखते[2](68) और जब वे यूसुफ़ के पास पहुँचे तो उन्होंने अपने भाई को अपने क़रीब ही रखा कहा कि मैं तुम्हारा भाई हूँ बस जो कुछ वे करते रहे हैं उस पर दुखी न हो(69) फिर जब उन्होंने उनका सामान तैयार करा दिया तो अपने भाई के सामान में पीने का प्याला रखवा दिया, फिर एक ऐलान करने वाले ने ऐलान किया क़ाफ़िला वालो! तुम चोर हो(70) उन्होंने उसकी ओर मुड़ कर पूछा तुम्हारी कौन सी चीज़ खो गई(71) उन्होंने कहा कि शाही प्याला हमें नहीं मिल रहा है और जो भी उसको ढूँढ लाएगा उसको एक ऊँट भर अनाज मिलेगा और मैं उसकी ज़िम्मेदारी लेता हूँ(72) वे बोले ख़ुदा की क़सम तुम जानते ही हो हम देश में गड़बड़ करने नहीं आये और हम कभी चोर न थे(73) उन्होंने कहा कि अगर तुम झूठे हुए तो इसकी सज़ा क्या है(74) वे बोले उसकी सज़ा यह है कि जिसके सामान में भी वह मिल जाए वह खुद उसका बदला है, हम इसी तरह अत्याचारियों को सज़ा देते हैं(75) तो यूसुफ़ ने अपने भाई से पहले उनके सामान की तलाशी लेनी शुरु की फिर अपने भाई के सामान से उसे बरामद कर लिया, हमने इस

तरह यूसुफ़ के लिए उपाय किया, वे राजा के क़ानून के अनुसार अपने भाई को नहीं रोक सकते थे मगर जो अल्लाह चाहे, हम जिसके चाहते हैं दर्जे बढ़ा देते हैं और हर ज्ञान वाले के ऊपर एक ज्ञान वाला है[3](76) वे बोले कि अगर इसने चोरी की है तो इससे पहले इसके भाई ने भी चोरी की थी तो यूसुफ़ ने अपने मन ही मन में सोचा और उनके सामने प्रकट नहीं किया कहा तुम तो अत्यन्त बुरे लोग हो और जो तुम बयान कर रहे हो अल्लाह उसको खूब जानता है[3](77) वे बोले ऐ अज़ीज़े–ए–मिस्र इनके बूढ़े बाप हैं तो आप हममें से किसी को उनकी जगह रोक लीजिए हम देखते हैं कि आप बड़े एहसान करने वाले हैं(78)।

तफ़्सीर (व्याख्या):–

1. हज़रत यूसुफ़ ने उनके साथ यह व्यवहार किया कि अनाज का मूल्य जो वे लाए थे उनके सामान में वापस रखवा दिया और वह अपने पास से सरकारी ख़ज़ाने में जमा करवा दिया ताकि वे दोबारा आएं और बिनयामीन को लेते आएं, उन्होंने हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम को बड़ी मुश्किल से राज़ी किया कि अनाज जब ही मिलेगा जब बिनयामीन को साथ ले कर जाएंगे, बड़े क़ौल व क़रार के बाद हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम राज़ी हो गये और क़ाफ़िला रवाना हो गया।

2. हज़रत याकूब के सारे ही बेटे लंबे–चौड़े और सुन्दर काया के थे उनको ख़याल आया कि नज़र न लग जाए इसलिए कहा कि अलग–अलग दरवाज़ों से प्रवेश करना और साथ साथ बता दिया कि मैंने एक उपाय अपनाया है, होता तो सब अल्लाह ही के करने से यह हमेशा ध्यान रहे, कुछ किताबों में है कि जब सब भाई पहुँच गये तो हज़रत यूसुफ़ ने दो–दो को एक एक कमरे में ठहराया, दस हो गये, बिनयामीन बचे थे, कहा कि यह हमारे पास ठहरेंगे बस उनको सारी बातें करने का अवसर मिल गया।

3. हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने अल्लाह के आदेश से बिनयामीन को रोकने का यह उपाय किया कि शाही प्याला उनके सामान में छिपा दिया फिर अपने सेवक ढूँढने के लिए भेजा, तलाश में वह बिनयामीन के सामान में निकला, सजा देने से पहले ही हज़रत याकूब अलैहिस्सलाम के धार्मिक क़ानून के अनुसार वे निर्धारित कर चुके थे कि जो चोर सिद्ध हो उसी को रख लिया जाए, इस तरह हज़रत यूसुफ़ को बिनयामीन को रोकने का अवसर मिल गया, अगर हज़रत यूसुफ़ देश के संविधान पर चलते तो ऐसा संभव न था इसलिए कि वहां चोर की सज़ा हलकी थी।

4. जब अवसर नहीं आया तो यूसुफ़ के भाईयों ने तुरंत ही यूसुफ़ अलैहिस्सलाम पर चोरी का आरोप लगा दिया, इस पर हज़रत यूसुफ़ अलैहिस्सलाम ने दिल ही में सोचा कि मुझे चुरा कर तुम ले गये और कुएं में डाल आए, यह बहुत ही बुरा काम तुमने किया और आरोप हम पर।

❖❖❖

वोट

देश में अमन व शान्ति की बहाली के लिए सोच समझ कर वोट अवश्य करें।

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ0 हकीम सै0 अब्दुल हई हसनी रह0

पड़ोसी का हक और उसके बारे में वसीयत का बयानः-

अल्लाह का फरमान है–

अनुवादः–

और अल्लाह की इबादत करो और उसके साथ किसी और को साझी न ठहराओ, और माँ–बाप के साथ, रिश्तेदारों के साथ, यतीमों के साथ, गरीबों के साथ, करीब के पड़ोसी, और दूर के पड़ोसी के साथ, साथ में उठने बैठने वालों, और रास्ता चलने वाले मुसाफिरों और अपने गुलामों के साथ भी भलाई और नेकी करो।

(सूरः निसा–36)

हज़रत जिब्रईल अलै0 की ताकीदः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र रज़ि0 और हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया जिब्रईल अलै0 हमको बराबर पड़ोसियों के बारे में वसीयत करते रहे, यहाँ तक कि मुझको ख्याल हुआ कि कहीं उनको वारिस न बना दें।

(बुखारी व मुस्लिम)

ईमान की शर्तः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया वह ईमान वाला नहीं, यह बात आप सल्ल0 ने तीन बार कही, आप सल्ल0 से पूछा गया, कौन ऐ अल्लाह के नबी? आप सल्ल0 ने फरमाया जिसकी शरारतों से उसका पड़ोसी सुरक्षित न हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

किसी तोहफा को कमतर और हकीर न समझेः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया ऐ मुसलमान औरतों! पड़ोसन अपनी पड़ोसन के लिए किसी तोहफे को कम न समझे, चाहे बकरी का खुर ही क्यों न हो।

(बुखारी व मुस्लिम)

पड़ोसी को दुख न देः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– जो अल्लाह पर और आखिरत के दिन पर ईमान रखता हो, उसे चाहिए कि अपने पड़ोसी को दुख न दे। (बुखारी व मुस्लिम)

दीवार में लकड़ी गाड़ने से रोकना न चाहिएः–

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– पड़ोसी अपने पड़ोसी को दीवार आदि में लकड़ी गाड़ने से न रोके। (बुखारी व मुस्लिम)

सबसे करीब रहने वाला पड़ोसी ज़्यादा हकदार हैः–

हज़रत आइशा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 से पूछा गया, ऐ अल्लाह के रसूल! मेरे दो पड़ोसी हैं, मैं किसको तोहफ़ा भेजूं? आप सल्ल0 ने फरमाया– जिसका दरवाज़ा तुमसे सबसे करीब हो। (बुखारी)

सालन बढ़ा कर पड़ोसी की मददः–

हज़रत अबूज़र रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने फरमाया– ऐ अबूज़र! जब तुम कोई सालन पकाओ तो शोरबा (सालन) बढ़ा दिया करो और अपने पड़ोसी का ख्याल रखो। (मुस्लिम)

भला दोस्त और भला पड़ोसी अल्लाह के नज़दीक पसन्दीदा हैः–

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन अल–आस रज़ि0 बयान करते हैं कि अल्लाह के

शेष पृष्ठ ...27..पर

सम्पादकीय

मदरसा, मुस्लिम समाज की बुनियादी ज़रूरत

मुहम्मद गुफ़रान नदवी

इस्लामी इतिहास में मदरसे का नाम और काम 1500 साल पुराना है वास्तव में इसकी बुनियाद उस समय पड़ी जब मक्का मुअज़्ज़मा के ग़ारे हिरा में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर सूरह अलक़ की प्रारम्भिक आयतें ''इक़रअ़ बिस्मि रब्बिकल–लज़ी.....नाज़िल हुई जिसका अनुवादः ''पढ़िये अपने उस पालनहार के नाम से जिसने पैदा किया, जिसने इंसान को खून के एक लोथड़े से बनाया, पढ़ते जाइये और आपका पालनहार सबसे ज़्यादा करम करने वाला है, जिसने क़लम से ज्ञान दिया, इंसान को वह सिखाया जो वह जानता नहीं था'' यह पाँच आयतें वह हैं जो सबसे पहले हज़रत मुहम्मद सल्ल0 पर उतरीं जब आप सल्ल0 ग़ारे हिरा में इबादत में व्यस्त थे, हज़रत जिब्रईल अलैहिस्सलाम तशरीफ़ लाए और कहा कि ''इक़रअ़'' (पढ़िये) आप सल्ल0 ने कहा कि मैं पढ़ा नहीं हूँ, हज़रत जिब्रईल अलै0 ने आप सल्ल0 को पकड़ कर दबाया और फिर वही कहा आप सल्ल0 ने वही जवाब दिया, तीसरी बार खुद उन्होंने पाँचों आयतें पढ़ीं इस प्रकार इस पहली वह्य से यह बता दिया गया कि इस दीन (धर्म) का आधार शिक्षा (इल्म) पर है और इस उम्मी पैगम्बर के द्वारा यह मुअ़जिज़ा प्रकट होगा कि ज्ञान का साधन क़लम है लेकिन आप सल्ल0 को अल्लाह कीओर से बिना किसी माध्यम के वह ज्ञान प्राप्त होंगे जिनसे क़यामत तक दुनिया फ़ायदा उठाती रहेगी, साथ साथ यह बात भी साफ़ कर दी गई कि ज्ञान फ़ायदा तभी पहुँचाएगा जब वह अल्लाह के नाम की छाया में होगा, इसीलिए ''इक़रअ'' के साथ ''बिस्मिरब्बिक'' की क़ैद भी लगा दी गई।

कुरआन शरीफ़ जो तीस पारों और एक सौ चौदह सूरतों पर आधारित है एक साथ नहीं उतरा बल्कि ज़रूरत और हालात के अनुसार थोड़ा–थोड़ा उतरा, कुरआन अल्लाह की आख़िरी किताब है जो रहती दुनिया तक समस्त इंसानों की हिदायत और मार्गदर्शन के लिए है, अल्लाह ने इसकी हिफ़ाज़त की ज़िम्मेदारी ली है, फरमाया ''हम ही ने इस उपदेश को उतारा है और बेशक हम ही इसकी रक्षा करने वाले हैं'' सूरह अल–हिज्र–आयतः9। कुरआन में शब्द जिक्र आया है और जिक्र का मतलब पवित्र कुरआन है, पहले किताबें उतरीं लेकिन उनकी रक्षा उनकी क़ौमों के ज़िम्मे की गई जिसको उन्होंने पूरा नहीं किया, पवित्र कुरआन आखिरी किताब है इसको क़यामत तक रहना है, इसलिए इसकी रक्षा का वादा अल्लाह ने खुद किया है, इसी का परिणाम है कि आज लाखों छोटे–छोटे बच्चों के सीनों में यह मार्गदर्शक पुस्तक (कुरआन) सुरक्षित है, दुनिया की शक्तियाँ जो भी उपाय करलें लेकिन न वह पवित्र कुरआन को मिटा सकी हैं और न कभी मिटा सकेंगी, कुरआन का पढ़ना, पढ़ाना और उसको याद करना यह सब काम मदरसों द्वारा होता है जो दुनिया के कोने कोने में फैले हुए हैं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब मक्का से मदीना मुनव्वरा हिजरत करके पहुँचे तो एक ज़मीन ख़रीदी और उस पर मस्जिद का निर्माण किया और उसी मस्जिद के एक कोने में ''साएबान'' डाला गया जिसको दुनिया सुफ़्फ़ा के नाम से जानती है। यह इस्लामी इतिहास का पहला मदरसा है जिसमें पढ़ने वालों की संख्या घटती बढ़ती रहती थी कभी कभी यह संख्या चार सौ तक पहुँच जाती थी, यह फुल टाइम मदरसा था, पढ़ने वाले विद्यार्थी वहीं रहते थे और वहीं खाते, और सोते थे, कुरआन, हदीस की शिक्षा प्राप्त करते थे। प्रसिद्ध सहाबी हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 उन्हीं लोगों में थे, हर समय हुजूर सल्ल0 की ख़िदमत में हाज़िर रहते यही वजह है कि हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 द्वारा बड़ी संख्या में हदीसें आई हैं।

सुफ़्फ़ा में रहने वालों के खाने का इन्तिज़ाम लोगों के घरों से होता था, कभी खाना पहुंचा दिया जाता था और कभी घरों पर बुला लिया जाता था, नबी करीम सल्ल0 भी अपने दस्तर ख़ुवान पर कभी कभी दावत देते थे। पंदरह सौ साल बाद भी यह तरीक़ा राएज है कि यह दीनी मदरसे देहात और शहर जहाँ भी हैं मुसलमानों की मदद और सहयोग से चल रहे हैं। मुसलमान आज भी अपनी ज़कात सदक़ात और अतीयात की लाखों रक़में इन मदरसों में देते हैं, यह मदरसे आपको इतिहास में बड़ी बड़ी जामिआत और दारुलउलूम की सूरत में नज़र आएंगे, बड़े और प्रसिद्ध मदरसों के नाम आपके सामने पेश हैं– जामे अज़हर मिस्र, जामे ज़ैतूना, जामे क़ज़वीन, हमारे मुल्क हिन्दुस्तान में दारुल उलूम देवबन्द, दारुल उलूम नदवतुल उलमा, मदरसा मज़ाहिरुल उलूम सहारनपुर, यह चोटी के कुछ मदरसों के नाम हैं, वरना मदरसों की एक लम्बी सूची है। इन मदरसों का इल्म और दीन के मैदान में बड़ा योगदान है, इन मदरसों से पढ़ कर निकलने वाले उलमा का देश और विदेश में बड़ा सम्मान है, बाहर की दुनिया में वह देश की पहचान हैं, स्वतंत्रता संग्राम में देश वासियों के साथ न केवल वह कांधे से कांधा मिला कर चले बल्कि आगे बढ़ कर स्वतंत्रता संग्राम का नेतृत्व किया और बड़े साहस और हिम्मत के साथ अपनी जानों का बलिदान दिया। ब्रिटिश साम्राज्य ने जिन उलमा को फाँसी दी, इतिहासकरों ने उनकी संख्या 32,33 हज़ार बताई है, उदाहरण के रूप में कुछ उलमा के नाम पेश हैं जिन्होंने अहम रोल अदा किया और न भुलाई जाने वाली उनकी कुरबानियाँ हैं– शेखुल हिन्द मौलाना महमूदुलहसन देव बन्दी, शेखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद मदनी असीर माल्टा, मुजाहिदे मिल्लत मौलाना हिफ़ज़ुर्रमान सिवहारवी, मौलाना मुहम्मद अली जौहर, इमामुलहिन्द मौलाना अबुल कलाम आज़ाद, इस श्रृंखला में एक बहुत नुमाया नाम मौलाना अहमदुल्लाह शाह फैज़ाबादी का भी है जिनके सर पर अंग्रेज़ों ने 50 हज़ार रूपये का इनआम रखा था, कुछ इतिहासकार उनको डंके वाले बाबा के नाम से भी जानते हैं, यह बहुत सारांश में है, जिन उलमा के नाम दिए दिए गये हैं उनमें से प्रत्येक आलिम को यह हक़ है कि वह यह कहे–

मैं अकेला ही चला था जानिबे मंजिल मगर।
लोग साथ आते गए, कारवाँ बनता गया।।

❖❖❖

पिछले अंक से आगे

इस्लामी अक़ीदे (विश्वास)

मौलाना बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी

हौज़-ए-कौसरः-

अनुवादः— *"यक़ीनन हमने आपको कौसर अता कर दी है, तो आप अपने रब के लिए नमाज़ें पढ़ें और कुर्बानी करें"।*

(अल-कौसरः 1-2)

अल्लाह तआ़ला ने अपने आखिरी नबी हजरत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को ये इज़्ज़त भी अता फरमाई कि क़यामत के दिन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हौज-ए-कौसर आता होगा, उस हौज की कुछ तफसील सहीह हदीसों में आई है, नीचे वो रिवायतें पेश की जाती हैंः

अनुवादः "हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अंहु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमाया- जब मैं जन्नत में चल रहा था, तो मेरा एक नहर के पास से गुज़र हुआ, जिसके किनारे अंदर से खाली मोतियों से बने हुए हैं, मैंने हज़रत जिब्रईल से मालूम किया कि ये क्या है, उन्हों ने जवाब दियाः ये हौज-ए-कौसर है, जो आपके रब ने आपको आता फरमाया है, और उसकी मिट्टी तेज खुशबूदार मुश्क है ।

(अल-बुखारीः 7337)

अनुवादः "हजरत अब्दुल्लाह बिन अम्र रजियल्लाहु अंहुमा से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः मेरे हौज की दूरी एक महीना है, जिसके किनारे बिल्कुल बराबर हैं, और उसका पानी दूध से ज़्यादा सफेद और उसकी खुशबू मुश्क से ज़्यादा बेहतर है और उसके प्याले आसमान के सितारों की संख्या के बराबर हैं, अगर कोई शख्स उसको एक बार पी ले तो वो कभी प्यासा नहीं होगा ।

(अल-बुखारी 6579, सहीह मुस्लिम 6111)

हज़रत अबू हुरैरा रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः मेरा हौज इतना बड़ा है, जिसकी माप ईला और अदन की दूरी हो, जिसकी सफेदी बर्फ से कहीं ज़्यादा और जिसकी मिठास दूध के अंदर घुले हुए शहद से कहीं ज़्यादा है, और उसके बर्तनों की तादाद तो सितारों से कहीं ज़्यादा है और मैं उसके पास से लोगों को इस तरह रोक रहा हूँगा जिस तरह कि लोग अपने कुएँ से दूसरे लोगों के ऊँटों को दूर करते हैं, लेहाजा सहाबा किराम रज़ि0 ने पूछाः ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम क्या आप हम को उस वक़्त पहचान लेंगे? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बिल्कुल, तुम्हारे पास एक पहचान होगी जो किसी उम्मत के पास न होगी, तुम मेरे पास इस हाल में लौटोगे कि तुम्हारे मथ्थे और हाथ-पाँव वजू की वजह से चमक दमक रहे होंगे। (सहीह मुस्लिम 604)

हज़रत सहल बिन साद रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इरशाद फरमायाः मैं हौज पर तुममें सबसे पहले पहुँचने वाला हूँ, जिसका मेरे पास से गुजर होगा तो वो उस से पियेगा, और जो उससे पी लेगा तो वो कभी प्यासा न होगा, हाँ ! बहुत से ऐसे लोग भी मेरे पास पहुचेंगे कि मैं उनको पहचानता हूँगा और वो मुझे पहचानते होंगे, लेकिन फिर उनके और मेरे दरमायान दूरी कर दी जाएगी, लिहाजा मैं कहूँगा कि ये तो मेरे (उम्मती) हैं, तो जवाब दिया जाएगा कि आपको नहीं मालूम कि इन्होंने आपके जाने के बाद क्या किया है, लिहाजा फिर मैं भी यही कहूँगा कि ऐसे लोगों से दूरी ही बेहतर है जिन्हों ने मेरे बाद कुछ कमी बेशी की ।

(सहीह बुखारी 7075 व 6584)

❖❖❖

इन्सान, क़ुरआन की नज़र में

हज़रत मौलाना सैयद मु0 राबे हसनी नदवी रह0

''और वह वक़्त याद करो जब तेरे परवरदिगार ने फ़रिश्तों से कहा कि मैं ज़मीन पर अपना नायब (प्रतिनिधि) बनाने वाला हूं, वह बोले क्या तू उसमें ऐसे को नायब बनायेगा जो उसमें फ़साद मचायेंगे और ख़ून बहायेंगे, हालांकि हम तेरी तारीफ़ व तस्बीह करते रहते हैं और तेरी पाकी बयान करते रहते हैं''।

(सूरः बक़रा–30)

कुरआन मजीद की शिक्षा किसी ख़ास क़ौम या ज़माने तक सीमित नहीं, उसकी शिक्षा और इन्सान के बारे में उसका फ़ैसला विश्वव्यापी और व्यापक है इस फ़ैसले में ज़िन्दगी के वह तमाम पहलू शामिल हो जाते हैं जिन पर चल कर इन्सान ऊँची विशेषताओं वाला इन्सान बनता है। जैसे जुल्म का जवाब जुल्म से न देना, दोस्त तो दोस्त है, दुश्मन के साथ भी भलाई करना, कंजूसी से बचना, फ़ज़ूल ख़र्ची से बचना, ग़रीबों, यतीमों, मिस्कीनों की मदद करना, बेग़रज़ निस्वार्थ हो कर लोगों के काम आना, नातेदारी रिश्तेदारी का ख़्याल, माँ–बाप की ख़िदमत, बच्चों से महब्बत, छोटों पर दया बड़ों का सम्मान, पड़ोसियों से अच्छा व्यवहार यह वह गुण हैं जिनको इस्लाम प्रमुखता देता है। और इन्सान में वही प्रमुखता देखना चाहता है, अल्लाह तआला ने अपनी किताब कुरआन मजीद में इन्हीं विशेषताओं का उपदेश दिया है, चुनांचि प्रथम काल के मुसलमानों ने भलीभांति उन उपदेशों पर अमल किया, कुरआन मजीद की शिक्षा को अपने दिलो दिमाग में उतारा और उच्च मानवीय आदर्श पेश किया, जब वह मुहाजिर बन कर मदीना आये तो मदीने के अन्सार मुसलमानों ने खुद तकलीफ़ें उठा कर मुहाजिरीन की मुसीबतें दूर कीं, कुरआन शरीफ़ ने सूरः हश्र में इसी ओर इशारा करते हुए फ़रमाया है ''वह दूसरों को अपने ऊपर प्राथमिकता देते हैं अगरचि वह खुद ज़रूरतमन्द हों''।

(सूरः हश्र आयत नं0–9)

सूरः दहर में सहाब–ए–किराम की इसी प्रकार की मानव विशेषताओं की प्रशंसा करते हुए कुरआन पाक में अल्लाह इरशाद फरमाता है–

''खुद खाने की ख़्वाहिश के बावजूद वह मिसकीन निर्धन, अनाथ और कैदियों को खाना खिला देते हैं''।

(सूरः दहर आयत नं0–8)

अच्छी बात को कहना और बुरी बात से रोकना भी इनसान के कर्तव्य में है, ख़ास कर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत पर यह ज़िम्मेदारी डाली गई है, इसके साथ खुद नेकी इख़्तियार करने और दूसरों की भी राहत की फ़िक्र करना उसके अच्छे कामों में बताया गया, और इसका उपदेश दिया गया। ''तुम लोग बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के लिए पैदा की गई है, तुम भलाई का हुक्म देते हो और बुराई से रोकते हो और अल्लाह पर ईमान रखते हो''।

(सूरः आले इमरान–110)

किसी भूले भटके मुसाफिर को रास्ता दिखाना रास्ते से पत्थर, काँटा और रुकावट दूर करना भी इन्सानियत है, किसी के साथ नेकी करके उसको याद न दिलाना, एहसान न जताना, शुक्रिये का तलबगार न होना, दिखावा और नुमाइश से बचना, यह सब इस्लाम और कुरआन की नज़र में इन्सानियत है, चुनांचि साधारण और सामान्य मुसलमानों को उपदेश है कि ''ऐ ईमान वालो! अपनी ख़ैरात को एहसान रख कर और उसको जता कर बरबाद न करो''।

(सूरः बक़रा आयत–246)

क्योंकि अच्छी बात कहना और मॉफ़ करना उस सदक़े और ख़ैरात से बेहतर है जो एहसान

जता कर उसके दिल को जिसको दिया जा रहा है दुख पहुँचाया जाए, इसलिए सदक़ा और ख़ैरात के लिए यह ज़्यादा अच्छा तरीक़ा बताया गया है कि इस तरह छुपा कर दिया जाए कि उसमें रियाकारी दिखावे का दख़ल न हो, दूसरी बात यह है कि सदक़ा ख़ैरात खुले दिल से देना चाहिए, यह काम अप्रसन्नता से न हो, यदि ऐसा कोई करता है तो यह मुनाफ़िकत की निशानी है और इस्लामी और इन्सानी नज़रिये के विपरीत है। इन बातों से कुरआन के इन्सानी नज़रिये की विशालता और सार्वभौमिकता का अन्दाज़ा होता है।

इस्लाम का इन्सानी नज़रिया, विश्वव्यापी नज़रिया है कि वह विभिन्न रूपों में अच्छाइयों को एकत्र करता है, वह एक ओर नम्रता और दीनता पर ज़ोर देता है, दूसरी ओर वह आत्म सम्मान की शिक्षा देता है इसी प्रकार वह जहाँ निर्धनता और दरिद्रता के हालात में सब्र और बरदाश्त का उपदेश देता है, वहीं वह शानोशौक़त और जलालो जमाल की तलक़ीन करता है इस्लाम का इन्सानी नज़रिया दुनिया के अम्नो सलामती, तरक़्क़ी, समृद्ध शाली के लिए दोनों क़िसमों की ताक़तों में सामंजस्य पैदा करता है, चुनांचि इस्लाम का इन्सानी नज़रिया अपने मानने वालों में केवल लाचारी और ग़रीबी ही पैदा नहीं करता बल्कि उसके साथ बुलन्द हिम्मती, पक्का इरादा आत्म विश्वास के जौहर भी उजागर करता है। तात्पर्य यह कि कुरआन मजीद के इन्सानी नज़रिये की विशेषता यह है कि उसने दुनिया को इन्सानी अख़लाक़ की ऐसी व्यापक व्यवस्था दी जो इन्सान के उच्च स्तर के अनुकूल हैं, इसी के साथ उसको इन्सानी व्यवहार और अमली योग्यता के अनुसार अमल के लायक़ और आसान बना दिया ताकि हर शख्स, और हर क़ौम के लिए हर ज़माने में अमल करना आसान हो, यह इस्लाम ही की आडियोलॉजी की देन है, कि नीचे के लोगों ने ऊपर वालों की जगह प्राप्त की। उस बुलन्द जगह को पाने के लिए अल्लाह ने ईमान की शर्त लगाई है, फरमाया– ''व अनतुमुल आलौन इन कुन्तुम मूमिनीन''

(सूरः आले इमरान आयत नं0 139)

अनुवादः– और तुम ही सर बलन्द होगे, अगर तुम मोमिन रहे)। ◆◇◆

अपने पाठकों से

- सच्चा राही आपको कैसा लगा आप अपनी राय से अवगत करें, हम आपके पत्रों की प्रतीक्षा में रहते हैं। हम आपके सुझाओं का स्वागत करते हैं।
- हम अपने सम्मानित लेखकों से अनुरोध करते हैं कि वह सामाजिक, साहित्यिक, ऐतिहासिक, वैज्ञानिक, भौगोलिक विषयों पर अपने मूल्यवान लेख लिख कर हमें भेजें, हम आपके शुक्र गुज़ार होंगे।
- आप अपने लेख सरल भाषा में लिखें तथा विषय स्पष्ट हो, जो पाठकों को आसानी से समझ में आ सकें।
- आप सच्चा राही के नये ग्राहक बना कर हमारा सहयोग करें।
- आप अपनी आवश्यक दीनी समस्याएं लिखें हम उनके समाधान लिख कर सच्चा राही में प्रकाशित करेंगे।
- **आप अपने लेख भेजने के लिए उप सम्पादक के नं0 9450784350 का प्रयोग करें।**

E-mail: *jamalnadwi123@gmail.com*

पिछले अंक से आगे

भारत के अतीत में

मुस्लिम शासकों की धार्मिक निष्पक्षता

सैयद सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

दिलों पर शासनः–

सभी प्रतिष्ठित सूफ़ी मुसलमान शासकों को न्याय करने का उपदेश देते रहे और फिर वह स्वयं यहाँ के ग़ैर मुस्लिमों के साथ जिस पवित्र और उच्च चरित्र से व्यवहार करते रहे, उसका परिणाम यह निकला था कि उनके चरित्र की श्रेष्ठता और पवित्रता से प्रभावित हो कर यहां के ग़ैर मुस्लिम इस्लाम की परिधि में सम्मिलित होते रहे। जिसकी एक अलग दास्तान है। मगर यह वास्तविकता है कि जब शासक सिंहासन और मुकुट के लिए एक जगह से दूसरी जगह सैनिक अभियान में व्यस्त थे तो ख़ानक़ाहों की बोरियों पर सोने वाले इन्सानों के दिलों को जीतने में लगे हुए थे और यह जीतना उनके उदारतापूर्ण इबादत, चिन्तन, दिल की शुद्धता और प्यार के माध्यम से हो रही थी जिसको उस ज़माने के लेखक पूरे विवरण के साथ लिखते, तो हिन्दुस्तान में इस्लाम का इतिहास कुछ और ही नज़र आता। हिन्दुओं में जात–पात का भेदभाव था उससे उनका एक बड़ा वर्ग कुछ ऐसा नाराज़ था कि जब उन सूफ़ियों ने समता, उदारता, सत्यवादिता और मानव– प्रतिष्ठा की शिक्षा देकर अपने आध्यातमक आकर्षण के जलवे दिखाए तो यहाँ के उन लोगों की निगाहों में, जिनको यहां की सामाजिक व्यवस्था ने कुचल रखा था, इस्लाम की सामाजिक, धार्मिक और आध्यात्मिक आकर्षण की निशानियाँ गुज़रने लगीं जिसके बाद वह इस्लाम की तरफ़ चाहे अनचाहे झुकने लगे।

अमीर खुसरो की उदारताः–

चिश्ती सिलसिले की उदारतापूर्ण शिक्षाओं की रोशन मिसालें हज़रत अमीर खुसरो और अमीर हसन संजरी के यहां मिलती हैं। यह दोनों लोग ख़्वाजा निजामुद्दीन औलिया से बैअत थे। पहले कहा गया है कि आश्चर्य तो यह है कि मौलाना ज़ियाउद्दीन बरनी भी हज़रत निजामुद्दीन औलिया के शिष्य थे लेकिन उन्होंने अपने आज़ाद विचारों की वजह से जो किताबें लिखीं, उससे निश्चित रूप से इस्लाम और मुसलमानों के इतिहास को नुकसान पहुँचा लेकिन उनके ज़हर के विरूद्ध संजीवनी हज़रत अमीर खुसरो और अमीर हसन संजरी के लेखों में मिलती है जो बरनी ही के ज़माने में नेक दिली, उदारता और खुली मानसिकता का उपदेश दे रहे थे। अमीर खुसरो ही की रिवायत है कि एक मुसलमान हज के लिए मक्का जा रहा था कि रास्ते में एक ब्राह्मण मिला जो सोमनाथ जा रहा था। यह ब्राह्मण अपने विश्वास में ओत–प्रोत होकर ज़मीन पर लेट–लेट कर नापता जाता (दण्डवत करता जाता), हाजी ने ब्राह्मण से पूछा, दोस्त तुम कहाँ जा रहे हो, ब्राह्मण ने कहा मैं तो कई साल से इसी तरह सफर कर रहा हूँ। हाजी ने कहा, खुदा ने तुमको दो पाँव दिये हैं, तुम चलने की बजाए

अपने सीने के बल क्यों रेंग रहे हो। ब्राह्मण ने उत्तर दिया, जबसे मैंने अपने प्राण मूर्ति (अपने उपास्य) के हवाले कर दिए हैं, इसी तरह सीने के बल रेंग रहा हूँ। अमीर खुसरू लिखते हैं कि हिन्दू मूर्ति पूजकों पर व्यंग किया जाता है लेकिन विश्वास में जो श्रद्धा है, उससे शिक्षा ली जा सकती है।

वह अपनी मसनवी दूल रानी खिज्र खाँ में लिखते हैं कि एक आग पूजने वाले हिन्दू से पूछा गया कि वह आग की पूजा क्यों करता है और उसके लिए क्यों जान देता है, उसने उत्तर दिया कि आग को देखकर मिलने की उम्मीद जागती रहती है और आग में नाश हो कर अमरता प्राप्त होती है। अमीर खुसरो ने आग की पूजा तो नहीं की लेकिन उस आग पूजने वाले के उत्साह और भावना का सम्मान करने का परामर्श दिया है।

अमीर खुसरो का अपना धर्म तो इस्लाम था, इसलिए हिन्दू मत को उस पर किसी तरह वरीयता देना पसंद नहीं करते लेकिन अपने हम वतन भाईयों की तसल्ली और दिलदारी के लिए उनके धर्म को दुनिया के और सभी धर्मों से बेहतर समझने के लिए तैयार हो गए। हिन्दू धर्म को अपने तर्कों से दैत्यवाद, ईसाई धर्म ज़रदुस्ती धर्म, नक्षत्रो की पूजा करने वाले, तत्ववादियों, शायदवाद और पारसी धर्म से बेहतर घोषित किया है। वह यह भी लिखते हैं कि हिन्दू पत्थर, जानवर, सूरज और पेड़ को अवश्य पूजते हैं लेकिन उनकी पूजा में श्रद्धा है और वह यह समझते हैं कि यह सब एक ही रचयिता की रचनाएं हैं। उसके आज्ञापालन का इन्कार नहीं करते, इन चीज़ों की पूजा इसलिए करते हैं कि उनके बाप–दादा उनकी पूजा करते आये हैं। अमीर खुसरो अलबैरूनी की तरह हिन्दुओं के एकेश्वरवाद की धारणा को भी स्वीकार करते हैं। लिखते हैं कि हिन्दू हमारे धर्म के समर्थक नहीं लेकिन उनके बहुत से विश्वास हमारे विश्वासों जैसे हैं, वह अल्लाह तआला की एकता, उसकी हस्ती और आदिकाल से मौजूद होने को मानते हैं, उसकी रचाना करने की क्षमता और उसको रोजी देने वाला, पैदा करने वाला, सक्रिय, कर डालने वाला, मालिक और हर छोटी–बड़ी चीज़ का जानने वाला होने के कायल हैं। अमीर खुसरो ने यह बातें अपनी मसनवी न सपहर (पृ0 164) में लिखी हैं।

हिन्दू मर्द और औरत में वफ़ादारी की भावना होती है, इससे भी अमीर खुसरो प्रभावित हुए। कहते हैं कि हिन्दू अपनी वफ़ादारी में तलवार और आग से अपने प्राण दे सकता है और एक हिन्दू औरत अपने पति के लिए जल कर राख हो जाती है। हिन्दू मर्द अपनी मूर्ति और मालिक के लिए अपने प्राण भेंट चढ़ा देता है। इस्लाम ने इन चीज़ों को वैध नहीं रखा है। लेकिन यह बड़ी कार गुजारी है। यदि हमारी शरीअत में इसकी अनुमति हो तो बहुत से लोग इस सौभाग्य को प्राप्त करने में अपने प्राण न्यौछावर कर दें।

अमीर खुसरो तो हिन्दुओं की हर चीज़ को प्रिय रखते। लिखते हैं कि बुद्धि और अर्थ हिन्दुस्तान में अनुमान से बाहर है। यूनान, दर्शनशास्त्र में प्रसिद्ध है लेकिन हिन्दुसतान इसमें भी कम नहीं। यहाँ तर्कशास्त्र भी है और नक्षत्र विज्ञान भी और तर्क विद्या भी। हाँ हिन्दू धर्मशास्त्र से

परिचित नहीं है लेकिन वह भौतिक विज्ञान, गणित और खगोल आदि के विशेषज्ञ हैं। (मनसवी, न सपहर, पृ0161–62) संस्कृत भाषा की प्रशंसा तो बार बार की है, लिखते हैं अरबी के अतिरिक्त उसको सभी भाषाओं पर श्रेष्ठता प्राप्त है।

फिर हिन्दुस्तान के वातावरण, फूलों, फलों, कपड़ों, जानवरों पान, यहाँ की महिलाओं के सौन्दर्य की प्रशंसा में उनका क़लम बहुत तेज़ दौड़ता रहा है। वह तो यहां तक लिख गये हैं कि शोख़ और सादा सुन्दर हिन्दू प्रेमियों की वजह से मुसलमान भी सूरज के पुजारी हो सकते हैं। यहाँ के अतिसुन्दर बच्चों को देख कर खुसरो कहते हैं कि वह स्वयं खराब और सरमस्त हो गए हैं।

अधिक विवरण के लिए लेखक की किताब ''हिन्दुस्तान अमीर खुसरो की नज़र में'' पढ़ी जा सकती है।

अमीर खुसरो के पीर हज़रत ख़्वाजा निजामुद्दीन औलिया (मृत्यु 1324 ई0) थे। जिनके एक भांजे मौलाना तक़ीउद्दीन नूह थे, हज़रत ख़्वाजा उनको बहुत प्रिय रखते थे। उनकी मृत्यु जवानी में ही हो गयी थी। हज़रत ख़्वाजा को इससे बहुत दुख पहुँचा, छः महीने तक उन पर खामोशी तारी रही। इससे अमीर खुसरो भी दुखी रहते थे। वह निरन्तर इस चिन्ता में रहते थे कि किस तरह पीर साहब का दुख कम हो, उस ज़माने में हिन्दुओं का बसन्त का मेला लगा, वह दिल्ली में कालका जी के मंदिर पर सरसों के फूल चढ़ा रहे थे। और मस्त हो कर गीत गा रहे थ। अमीर खुसरो भी इस दृश्य को देख कर आपा खो बैठे, फ़ारसी और हिन्दी की कुछ कविताएं उसी समय उनके मुँह से निकलीं। सरसों के फूल तोड़े और पगड़ी को टेढ़ी करके मस्ती की शान पैदा की, झूमते–झामते कविताएं पढ़ते हज़रत ख़्वाजा की सेवा में उपस्थित हुए जो उस समय अपने भांजे की मज़ार पर थे, अमीर खुसरो की मस्ती की अदा देख कर और उनकी कविताएं सुन कर मुस्कराने लगे। फिर तो अमीर खुसरो का काम बन गया। उस दिन से दिल्ली में जब हिन्दू कालका जी के मंदिर पर जाते तो दिल्ली और आस–पास के सूफ़ी कव्वालों को लेकर सरसों के फूल हाथ में लिए कविताएं पढ़वाते हुए मौलाना तक़ीउद्दीन की मज़ार पर जाते, वहां से हज़रत ख़्वाजा की मज़ार आते। उन कविताओं में एक शेअर यह भी हैः

अश्क रेज़ आमदसत अब्र बहार
साकिया गुल बरेजो वादः बयार

कव्वाल हिन्दी की ठुमरियों को पढ़–पढ़ कर इसी शेअर को बार–बार दुहराते, हिन्दी की एक पंक्ति यह है–

अरब यार तोरी बसन्त मनाई

यह पढ़ा जाता तो बहुत प्रभाव पैदा होता। धीरे–धीरे दिल्ली की दरगाहों में पन्द्रह दिन तक बसन्त का मेला रहने लगा, दूसरी जगहों पर भी मुसलमान बसन्त मनाने लगे, बसन्त के अवसर पर अमीर खुसरो का एक गीत उनसे इस तरह भी जोड़ा गया है–

हज़रत ख़्वाजा संग खेले धमाल
बाये ख़्वाजा मिल बन बन आयो नास
हज़रत रसूल साहब जमाल
हज़रत ख़्वाजा संग खेले धमाल
अरब यार तेरो बसन्त मनाइयो
सदा रखिए लाल गुलाल
हज़रत ख़्वाजा संग खेले धमाल

.....जारी.....

❖❖❖

मित्रता तथा शत्रुता केवल अल्लाह के लिए

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद तक़ी उस्मानी

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का प्रसिद्ध कथन है कि ''यदि मैं इस संसार में किसी को अपना (जिगरी तथा सच्चा) मित्र बनाता तो अबू बक्र रज़ि0 को बनाता'' तात्पर्य यह कि अबू बक्र को भी अपना खलील (सच्चा मित्र) न बनाया कारण यह कि इस संसार में वास्तविक मित्र बनाने योग्य कोई नहीं है, वास्तविक तथा सच्ची मित्रता केवल अल्लाह से होनी चाहिए इस लिए कि ऐसी मित्रता जो मनुष्य के हृदय पर अपना ऐसा अधिकार जमा ले कि वह जो कहे वही करे तथा मनुष्य का हृदय उस का वशीभूत (फरमाँ बरदार) हो जाए ऐसी मित्रता अल्लाह के अतिरिक्त किसी और से उचित नहीं।

अलबत्ता इस संसार में किसी से जो मित्रता होगी वह अल्लाह से प्रेम के अधीन होगी एवं सांसारिक मित्र की हर बात न मानी जाएगी, उसके कहने से पाप न किया जाएगा, मित्र की मदद में पाप तथा अल्लाह की अवज्ञा न होगी अतः पहली बात तो यह है कि इस संसार में हर प्रकार की मित्रता अल्लाह तआला की मुहब्बत और मित्रता के अधीन होनी चाहिए, दूसरी बात यह है कि इस संसार में ऐसा दोस्त मिलता ही कहां है जिसकी दोस्ती अल्लाह की दोस्ती में लीन हो ढूंढने और खोजने पर भी ऐसा मित्र नहीं मिलता जिस को वास्तव में मित्र कह सकें और जिस की मित्रता अल्लाह की मित्रता के अधीन हो तथा वह कठोर परीक्षा के समय पक्का उतरे ऐसा मित्र बड़ी कठिनाई से प्राप्त होता है, भागयवान ही को ऐसा मित्र प्राप्त होता है मेरे पिता मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद शफ़ीअ़ रह0 के सामने जब मेरे बड़े भाई साहिबान अपने मित्रों का वर्णन करते तो पिता जी कहते कि तुम्हारे इस संसार में बहुत से मित्र हैं मैं साठ वर्ष का हो चुका हूं मुझे तो इस संसार में कोई सच्चा मित्र न मिल सका इस पूरी आयु में केवल डेढ़ मित्र मिल सके एक पूरा दूसरा आधा (मौलाना ने अपने डेढ दोस्तों को खोला नहीं) परन्तु तुम लोगों को बहुत से मित्र मिल जाते हैं मित्रता के मापदण्ड पर पूरा उतरने वाला वह होता है जो कठिन परीक्षाओं में पक्का और खरा उतरे ऐसे मित्र बहुत कम मिलते हैं।

अतः यदि किसी को अल्लाह की मित्रता के अधीन मित्र बनाओ तो उस मित्रता में भी इस का प्रबन्ध करो कि उस मित्रता में अल्लाह की निर्धारित सीमाओं का उल्लंघन न हो यह दोस्ती सीमाबद्ध हो ऐसा न हो कि सुब्ह से शाम तक मित्र ही के साथ लगे रहें, खाना पीना भी उसी के साथ हो, भेद की बातें भी उस से कही जाएं अपितु अपनी हर बात उस पर जाहिर की जाए लेकिन अगर कल को उस से मित्रता न रहे तो तुम ने अपने सारे भेद उस पर खोल दिए हैं अब वह मित्र तुम्हारे सब भेद हर स्थान पर उछालेगा और वह तुम्हारे लिए हानिकारक सिद्ध होगा। अतः मित्रता संतुलन के साथ होना चाहिए यह न हो कि आदमी मित्रता में उसकी

सीमाओं के पार चला जाए।

आज कल हमारे यहां जो राजनीतिक वातावरण है उस की दशा यह है कि अगर किसी राजनीतिक लीडर से संबंध हो गया और वह संबंध कुछ बढ़ गया तो उस को इस प्रकार बांस पर चढ़ाते हैं कि उस में अब कोई दोष नज़र नहीं आता और अगर कोई दूसरा व्यक्ति उस लीडर का कोई दोष बताए तो वह स्वीकार नहीं होता अपितु बुरा लगता है तथा उस लीडर के विषय में यह मान लिया जाता है कि वह पाप रहित है परन्तु उसी से जब राजनीतिक शत्रुता हो जाती है तो उस में कोई भलाई नज़र नहीं आती, दोनों रूपों में सीमाओं का उल्लंघन है इस प्रकार की मित्रता से अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने रोका है मैंने बार बार कहा है कि केवल नमाज़ व रोज़े का नाम दीन नहीं है, नमाज़ और रोज़ा भी दीन में अनिवार्य हैं परन्तु यह भी दीन का भाग है कि किसी से प्रेम करो तो संतुलन के साथ प्रेम करो और यदि किसी से शत्रुता हो तो उस में भी संतुलन हो जो अल्लाह के बन्दे हैं वह इन बातों को समझते हैं, यह शासक और राजनीतिक लीडर तथा नेता इन से भी संतुलित संबंध होना चाहिए यह न हो कि जब उन से संबंध हो गया तो उन से संबंध में सीमाओं का उल्लंघन होने लगे अतः मित्रता तथा शत्रुता इस नीयत के साथ हो कि मित्रता अल्लाह के लिए हो तथा शत्रुता अल्लाह के लिए हो।

नोटः— इस लेख के आरंभ में जो हदीस आई है वह एक बड़ी हदीस का टुकड़ा है इस में ख़लील का अनुवाद सच्ची मित्रता से किया गया है नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अनुवादः ''अगर मैं किसी को ख़लील बनाता तो अबू बक्र को खलील बनाता'' इन शब्दों से यह धोखा न होना चाहिए कि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अबू बक्र को मित्र नहीं बनाया, वास्तव में शब्द ''ख़लील पवित्र कुर्आन में एक विशेष मित्रता को दर्शाता है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस विशेष मित्रता को केवल अल्लाह के लिए विशिष्ट रखते हैं अन्यथा हज़रत अबू बक्र अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को प्रिय थे, यारेगार थे, उल्लेखित हदीस के आगे पीछे के शब्दों से भी यह बात स्पष्ट हो जाती है, हम यहां हदीस के आगे पीछे के शब्दों के साथ हदीस का उल्लेख कर रहे हैं ताकि कोई भ्रान्ति में न पड़े''।

''हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि0 नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़्ल करते हैं कि आप ने फरमाया, अनुवादः ''निसन्देह सबसे अधिक अपनी संगत और अपने धन से मुझ पर उपकार करने वाले अबू बक्र हैं, अगर मैं अल्लाह के अतिरिक्त किसी को ख़लील (सच्चा मित्र) बनाता तो अबू बक्र को बनाता परन्तु उन से इस्लामिक भाई चारा तथा मुहब्बत है, मेरी मस्जिद में अबू बक्र की खिड़की के अतिरिक्त किसी और की खिड़की खुली न रहे''।

(बुखारी व मुस्लिम)

तिर्मिज़ी में यह शब्द अधिक हैं ''हर एक के एहसान का बदला हम ने चुका दिया है सिवाय अबू बक्र के, उनके एहसानों का बदला क़यामत के दिन अल्लाह तआ़ला देंगे''।

❖❖❖

वोट के इस्लामिक निर्देश

मौलाना ख़ालिद सैफुल्लाह रहमानी

अल्लाह तआला ने मुसलमानों को इस्लाम की हिफाजत के लिए ताक़त भर कोशिश और तैयारी का हुक्म दिया है–

अनुवादः–*"और दुश्मनों से मुकाबले के लिए ताक़त भर तैयारी करो"।*

(अल–अनफालः 60)

अरबी में "कुव्वत" का शब्द एक व्यापक शब्द है, जिस में वो सारी ताकतें शामिल हैं, जो परिणामों और फैसलों पर प्रभाव डाल सकें, ये ताकत सेना की भी हो सकती, जनशक्ति और संख्या बल और ज्ञान व बुद्धि की भी, जिन देशों में लोकतान्त्रिक व्यवस्था है, उनके यहाँ वोट भी एक बड़ी ताक़त है, वोट के जरिये सत्ता के शिखर तक पहुँचा जा सकता है और वोट की ताकत से इन्सान को बे पनाह बुलंदियों से अथाह पस्तियों तक गिराया जा सकता है, इसलिए वोट भी एक ताकत है, एक नेमत है और एक प्रभावी हथियार है।

इसलिए वोट के सिलसिले में दो बातों को ध्यान में रखना जरूरी है– एक ये कि मौजूदा हालात में मुसलमान होने की हैसियत से हमारे लिए वोट देना एक दीनी जिम्मेदारी है और वोट न देना उतनी ही बड़ी कोताही है, क्यों कि वोट एक गवाही है और जब हक् को हासिल करने और जुल्म को रोकने के लिए गवाही देनी जरूरी हो जाए और इस वक्त इस देश में मुसलमान इन प्रस्थितियों का सामना कर रहे हैं, तो इस से दूरी बना कर रखना किसी तरह जायज़ नहीं, बल्कि कुरआन की जबान में ये गवाही छिपाना है, जिससे अल्लाह तआला ने मना फरमाया है।

(अल–बकरहः 283)

झूठ बोलना, धोखा देना और मिलावट से काम लेना आम हालात में भी गुनाह है, लेकिन गवाही में धोखा देना आम झूठ और धोखे के मुकाबले में ज़्यादा बड़ा गुनाह है, इसका भी खयाल रखना चाहिए, दूसरे के नाम पर वोट देना, दुबारा वोट डालना, सिर्फ असंवैधानिक काम ही नहीं है, बल्कि एक गैर शरई काम भी है, और इसके लिए भी इंसान अल्लाह के यहाँ जवाब देह होगा, इसलिए कि इस्लाम हर हाल में नैतिक मूल्यों को बाकी रखने की तालीम देता है, चाहे लोगों के साथ मुआमला हो, सामाजिक जिंदगी हो, या सियासत का मैदान, यहाँ तक कि जंग की हालत।

लोकतंत्र में जहां बहुत सारी खूबियाँ हैं, वहीं कुछ खामियाँ भी हैं, इस्लाम उन खामियों को सुधार के साथ उनको स्वीकार भी करता है, सबसे बड़ी खामी ये है कि हमारे देश में चुनाव में भाग लेने वाले और जनप्रतिनिधि निर्वाचित होने के लिए न ज्ञान व बुद्धि की जरूरत है न नैतिकता और ईमानदारी की ज़रूरत, पहले लोग इस का रोना रोते थे कि जाहिल और कम शिक्षित लोग निर्वाचित हो जाया करते थे और देश की संवेदनशील समस्याओं का फैसला जाहिल और उजड लोगों के हवाले होता है, हमारे देश में कुछ ऐसे विधानमंडल सदस्य भी थे और हैं जो हस्ताक्षर की योग्ता भी नहीं रखते और अंगूठा निशान से ही काम चलाते हैं, अब बात इससे भी आगे जा चुकी है, और बड़ी संख्या में ऐसे तत्व विधानमंडलों में पहुँच रहे हैं जो नामजद और कुख्यात अपराधी हैं, उन पर क़त्ल, दुष्कर्म, हड़प और डकैती के खुले अपराध है, पहले पुलिस गिरफ़्तार करने के लिए उनका पीछा करती थी, अब उनकी सुरक्षा के लिए उनके पीछे पीछे रहती है, भ्रष्टाचार और सियासत का अब चोली दामन

का साथ है, और अब किसी भी नेता के बारे में इस तरह की खबरें सुन कर आम नागरिक को आश्चर्य नहीं होता, क्योंकि अब ये एक सामान्य बात है ।

जो लोग चुनाव में खड़े होते हैं, उन में शायद एक प्रतिशत भी ऐसे नहीं जो वास्तव में ईमानदार कहलाने के लायक हैं, जिनकी जिंदगी पाक–साफ़ हो, और जनता की संपत्ति में गड़बड़ी का इरादा लेकर इस मैदान में न उतरे हों, डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद 12 वर्ष भरत के राष्ट्रपति रहे और जब रिटायर्ड हो कर अपने वतन पटना गए तो उनको रहने के लिए कोई मकान भी उपलब्ध नहीं था, जवाहर लाल नेहरू दारुल मुसन्निफीन आजमगढ़ के सदस्य थे, उस समय सदस्यता शुल्क 500 रुपये था, जब मौलाना मसऊद अली नदवी नेहरू जी से सदस्यता शुल्क लेने गए, तो उनके पास पाँच सौ रुपये भी पूरे न हो सके और दो किस्तों में फीस अदा की और अपनी पासबुक दिखाई, जिसमें दो ढाई सौ रुपये से ज़्यादा न थे, लेकिन आज मामूली जनप्रतिनिधियों के महलों पर शाही महल और घर की डेकोरेशन पर "शद्दाद की जन्नत होने का गुमान होता है और पुलिस छापे मारती है तो मनों सोने के जेवरात उनके मकानात से बरामद होते हैं।

आज जब किसी प्रत्याशी के पक्ष में वोट देते हैं तो क्या आप इस बात की गवाही देते हैं कि सभी प्रत्याशियों में यही व्यक्ति आपकी निगाह में अपनी सच्चाई व ईमानदारी, सेवाभाव और प्रतिनिधित्व की योग्यता में अपेक्षाकृत बेहतर और राष्ट्र व देश केलिए लाभकारी है, किसी व्यक्ति के बारे में आपको संतोष न हो, आपको मालूम हो कि ये भ्रष्टाचारी और घूसखोर है और राष्ट्र सेवा के बजाए अपने और अपने परिवार की सेवा ही इसका मकसद है, इसके बावजूद आप उसको वोट दें, या लोगों को इसके लिए प्रेरित करें, तो अल्लाह तआला के यहाँ आप इसके बारे में जवाब देह होंगे, इसमें झूठी गवाही देने का गुनाह होगा, यूं तो हर झूठ बुराई है, लेकिन झूठी गवाही का गुनाह, गुनाह के सभी रूपों से बढ़ कर है, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इसे बहुत बड़े गुनाहों में शुमार किया है।

वोट में प्रत्याशी की योग्यता और किरदार के बजाए सिर्फ इस बात को मानक बनाना कि ये हमारे मुहल्ले का है, हमारे इस व्यक्ति से संबंध हैं, इसने हमारा अमुक व्यक्तिगत काम कर दिया था, ये वोट देने के लिए हमें पैसा दे रहा है,, सही नहीं, ये चोरी और झूठी गवाही है और ये पैसे घूस हैं, हर व्यक्ति इसके बारे में अल्लाह तआला के यहाँ जवाब देह है, ऐसा व्यक्ति एक दो नहीं, बल्कि पूरी कौम के साथ धोखेबाजी कर रहा है, इसलिए वोट के बारे में खूब सोच समझ कर फैसला करना चाहिए, सभी प्रत्याशियों पर गौर करना चाहिए, उसकी पिछली जिंदगी और आम जन के साथ उसके व्यवहार और रवैये की भी समीक्षा करनी चाहिए, और फिर जिस प्रत्याशी को बेहतर और लाभदायक समझता है, उसके पक्ष में वोट देना चाहिए, वोटर के लिए यही असल कामयाबी है, जिसके पक्ष में उसने वोट किया है अगर वो हार गया, तब भी वोट देने वाला अपने धार्मिक कर्तव्य और राष्ट्रीय जिम्मेदारी निभा चुका है, वो अल्लाह तआला के यहाँ चोरी करने वाला नहीं समझ जाएगा, और अगर ऐसे प्रत्याशी को वोट दिया जाए, जो राष्ट्र के लिए हितकर नहीं, नुकसानदेह है, तो यद्यपि प्रत्याशी जीत जाए, फिर भी एक मुसलमान वोटर के लिए यह हार ही है, क्योंकि वो अपने इस गलत अमल के बारे में अल्लाह के यहाँ जवाबदेह और ख़ुदा की तराजू में उसका ये अमल पकड़ के लायक़ है ।

❖❖❖

अपने जीवन में माता-पिता का सम्मान कीजिए

मुहम्मद नफीस

अल्लाह तआला ने जहां मनुष्य को बहुत से पुरस्कार तथा उपकार प्रदान किए वहीं एक महान उपकार यह किया कि माँ–बाप जैसी अमूल्य पूंजी प्रदान की मनुष्य यदि उन के अधिकारों तथा उपकारों का बदला देने में पूरा जीवन बिता दे तब भी उन का हक़ अदा नहीं कर सकता। माँ–बाप मनुष्य के लिए अल्लाह तआ़ला का महान वरदान हैं माँ न हो तो दिल को दिलासा (सांत्वना) दिलाने वाला कोई नहीं तथा बाप न हो तो जीवन की दौड़ में अच्छा परामर्श देने वाला कोई नहीं, माँ जीवन मार्ग की अंधेरियों में प्रकाश स्तंभ है तो बाप ठोकरों से बचाने वाला सुदृढ़ सहारा है, माँ यदि प्रेम की सरिता है तो बाप कृपा का समुद्र है माँ यदि रब की दया का प्रतीक है तो बाप रब की दया का उपहार है, माँ यदि अपनी संतान पर दयावान है तो बाप अपनी संतान पर कृपाशील, माँ पर यदि मुझे गर्व है तो बाप पर मुझ को अभिमान, माँ के चरणों के नीचे जन्नत है तो बाप जन्नत का दरवाजा है अर्थात माँ–बाप की सेवा से जन्नत में प्रवेश मिलता है।

अल्लाह के अधिकारों (हुकूकुल्लाह) के पश्चात बन्दों के अधिकारों (हुकूकुल इबाद) में सबसे बड़ा हक (अधिकार) माता पिता (वालिदैन) का है, अपनी संतान के लिए वही सबसे बड़े उपकारी हैं जो अपनी संतान के पालन पोषण तथा देख रेख में हर प्रकार के कष्ट को सहन करते हैं, संतान की प्रसन्नता के लिए अपना विश्राम बलि पर चढ़ा देते हैं, माँ–बाप के लिए उनकी संतान उन के हृदय का टुकड़ा तथा नेत्रों का प्रकाश होती है, बाप दिन रात अपने श्रम द्वारा अपना और अपनी संतान का पेट पालता है, दर दर की ठोकरें खाता है ताकि बच्चे भूखे न रहें, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बाप के सम्बन्ध में फरमाया अनुवादः ''रब की प्रसन्नता (रजामंदी) बाप की प्रसन्नता में है और रब की अप्रसन्नता बाप की अप्रसन्नता में है''। (तिर्मिजी)

इसी प्रकार माँ है कि वह अपना रक्त बहा सकती है परन्तु अपने बच्चे की आंख में आंसू नहीं देख सकती मां बच्चे के लिए महान वरदान है वह अपने बच्चे के पैर में कांटा चुभ जाने पर भी बेचैन और व्याकुल हो जाती है, बच्चा अगर नाराज हो जाए तो मां अपना खाना पीना छोड़ कर बच्चे को मनाने में लग जाती है। अल्लाह तआ़ला ने मां के अन्दर वह ममता रखी है कि रक्ताहारी हिंसक बाघनी मां भी अपने बच्चे को अपनी छाती से लगा कर रखती है। इसी प्रकार पशु पक्षी तथा जल थल के जीव यहां तक विषैले जीव जन्तु भी अपने प्राणों से अधिक अपने बच्चों का ध्यान रखते हैं। अतः संतान के लिए आवश्यक है कि वह अपने मां बाप का आदर सम्मान करे उनके स्थान, पद और उनकी श्रेष्ठता को पहुँचाने, उनकी वैध इच्छाओं की पूर्ति करे, उनके आज्ञापालन तथा उनके अनुकरण को अपने लिए अनिवार्य समझे, उनकी प्रसन्नता को अपने लिए भलाई का साधन जाने।

पवित्र हदीस में आया है कि हज़रत जाहिमा रज़ि0 ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से आवेदन किया कि मैं जिहाद में जाना चाहता हूं, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

फरमाया क्या तुम्हारी मां जीवित हैं? उन्होंने कहा, जी हां, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''मां की सेवा में लग जाओ इसलिए कि जन्नत मां के पैरों तले है''।

(नसई तथा अन्य पुस्तकें)।

इसीलिए माँ–बाप की राहत व आराम अर्थात उन को सुख पहुंचाने में संतान को चाहिए कि जितना संभव हो सके अपना माल खर्च करे, उनके साथ सद्व्यवहार करे उनके सामने कोई अशिष्ट कार्य न करे उन से अशिष्टता का व्यवहार न करे और न अपने अहंकार का प्रकटीकरण करे, अपनी आवाज़ उनकी आवज़ से ऊँची न करे, उनका नाम ले कर न पुकारे और न उनके सामने अपने को बड़ा दिखाने का प्रयास करे। यदि माँ बाप गैरमुस्लिम हों तब भी उन के साथ सद्व्यवहार करे शिष्टता तथा सदुपाय के साथ उनको भलाई की ओर बुलाने तथा बुराईयों से रोकने का प्रयास करते रहें फिर भी अगर माँ–बाप शिर्क व कुफ्र न छोड़ें तो खामोश रहें जब्र न करें पवित्र कुर्आन में है, अनुवादः ''दीन में जबरदस्ती नहीं''।

(अलबकराः 256)

उनके आदेशों का पालन करते रहें अलबत्ता यदि इस्लामी शरीअत के विरोध में कोई आदेश दें तो उन की बात न माने इस लिए कि ''अल्लाह की नाफरमानी में किसी मखलूक़ की बात न मानी जाएगी अर्थात किसी सृष्टि के आदेश पर अल्लाह की अवज्ञा न की जाएगी। पवित्र कुर्आन में है, **अनुवादः**– ''किन्तु यदि वे तुम पर दबाव डालें कि तुम किसी को मेरे साथ साझी ठहराओ, जिस का तुझे ज्ञान नहीं, तो उन की बात न मानना'' (लुकमानः 15) परन्तु इस का अर्थ यह नहीं कि तु उनको कष्ट पहुंचाए, दुख दे सेवा में कमी करे इस लिए कि माँ–बाप को कष्ट पहुंचाना महा पाप है और वर्जित (हराम) है अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''अल्लाह तआ़ला ने तुम पर माँओं की नाफरमानी हराम की है। (बुखारी व मुस्लिम)

एक दूसरे मौक़े पर फरमायाः ''अल्लाह तआला जिस पापी को चाहेगा उसको देर से सजा देगा परन्तु मां बाप की अवज्ञा करने वाले पापी को सजा देने में जल्दी करेगा और उसको उसके मरने से पहले इस संसार में भी दण्ड देगा'' (बैहकी) इस हदीस में माँ–बाप की अवज्ञा करने वालों केलिए कितनी कठोर चेतावनी है उसको आखिरत में दण्डित तो किया ही जाएगा। इस संसार में भी अपने मरने से पहले उसको सजा भुगतना होगी, माँ–बाप का आशिर्वाद तथा श्राप दोनों अल्लाह के यहां स्वीकृत प्राप्त करते हैं अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''कि तीन दुआएं अल्लाह तआला के यहां स्वीकृत प्राप्त करती हैं उत्पीड़ित की दुआ, यात्री की दुआ और माँ–बाप की दुआ अपनी संतान के लिए'' (तिर्मिजी)। (दुआ आशिर्वाद की हो चाहे श्राप की हो)।

यद्यपि माँ–बाप अपनी संतान को श्राप नहीं देते परन्तु यदि अपनी संतान के दुर्व्यवहार से दुखी हो कर श्राप देंगे तो वह श्राप अल्लाह तआला के यहां स्वीकार हो जाएगा और संतान पर पड़ कर रहेगा, संतान को चाहिए कि वह अपनी सेवाओं से अपने मां बाप को प्रसन्न रखें ताकि उन से आशिर्वाद पाएं।

संतान को चाहिए कि सदैव अपने माँ–बाप का आज्ञा कारी रहे, अवज्ञा न करे, हदीस में आया है जिस को बैहकी ने लिखा है कि ''नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो व्यक्ति अल्लाह तआ़ला को राजी रखने के लिए अपने माँ–बाप का आज्ञा कारी हो तो जन्नत के दरवाज़े उस के लिए खोल दिए जाते हैं और जो माँ बाप की अवज्ञा करे तो उसके

लिए जहन्नम के दरवाज़े खोल दिए जाते हैं और अगर माँ–बाप में से एक ही हो तो उस के आज्ञापालन या अवज्ञा करने का भी यही परिणाम होगा'' एक आदमी ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि अगर माँ–बाप अपनी संतान पर अत्याचार करें तब भी उन की अवज्ञा पर यही सजा मिलेगी? आपने उत्तर में तीन बार कहा, चाहे वह अत्याचार करें चाहे वह अत्याचार करें, चाहे वह अत्याचार करें तब भी उनके साथ दुर्व्यवहार करने पर यही सजा मिलेगी''।

संतान को माँ–बाप से उनके अत्याचारों का बदला लेने का हक नहीं है, क्या माँ–बाप अपनी नासमझी से अपनी संतान पर अत्याचार करें तो क्या संतान भी अपने माँ–बाप पर अत्याचार करेगी? नहीं कदापि नहीं।

नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तीन बार फरमाया ''वह रुस्वा हुआ, वह रुस्वा हुआ, वह रुस्वा हुआ,'' सहाबा ने पूछा ऐ अल्लाह के नबी कौन आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने अपने माँ–बाप को उनके बुढ़ापे में पाया या उन में से एक को पाया और उन की सेवा कर के अपने को जन्नत का अधिकारी न बना सका''। (मुस्लिम) ज्ञात हुआ कि माँ–बाप की सेवा जन्नत पाने का साधन है एक व्यक्ति ने आप की सेवा में उपस्थित हो कर पूछा ''ऐ अल्लाह के नबी संतान पर उनके माँ–बाप का क्या हक़ है''। नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''वह दोनों तेरी जन्नत हैं या जहन्नम'' (इब्नि माजा) अगर उनकी सेवा करेगा तो वह जन्नत हैं परन्तु यदि उन की अवज्ञा करोगे और उन से दुर्व्यवहार करोगे तो वह तुम्हारे लिए जहन्नम का कारण हैं।

माँ–बाप के महत्व का अनुमान इस हदीस से भी कीजिए कि एक बार हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा, ऐ अल्लाह के रसूल ''सब से अच्छा काम कौन सा है?'' नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जवाब दिया ''नमाज़ का पढ़ना उन्होंने कहा फिर? फरमाया ''माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार'' उन्होंने पूछा फिर? नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, ''अल्लाह की राह में जिहाद'' (तिर्मजी)।

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने माँ–बाप के हुकूक को बड़ा महत्व दिया यहां तक कि अल्लाह की राह में जिहाद करने के वर्णन से पहले माँ–बाप से सद्व्यवहार को वर्णित किया एक ओर अल्लाह के नबी ने माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार को नमाज़ के साथ वर्णित करके उस का महत्व बताया तो दूसरी ओर माँ–बाप की अवज्ञा को अल्लाह के साथ शिर्क के साथ वर्णित कर के उस का दोष बताया अतएव अल्लाह के नबी ने फरमाया ''क्या मैं तुम को सब से बड़े पाप न बता दूँ? ''सहाबा ने कहा अवश्य बताइये, अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''अल्लाह के साथ किसी को साझी ठहराना और माँ–बाप की अवज्ञा करना''।

(तिर्मिजी)

इन हदीसों से सीख लेना चाहिए उन लोगों को जो अपने माँ–बाप को, माँ–बाप कहने में अपना अपमान समझते हैं उन को अपने लिए बोझ समझते हैं, परन्तु उन को ज्ञात होना चाहिए कि जैसा बरताव वह अपने माँ–बाप के साथ करेंगे वैसा ही बरताव वह अपनी संतान से पाएंगे, अल्लाह के नबी ने एक बार फरमाया ''बाप तुम्हारे लिए जन्नत का दर्मियानी दरवाज़ा है चाहो तो उसे नष्ट कर दो या उस की सुरक्षा करो''।

(तिर्मिजी)

जब बाप का यह स्थान तथा सम्मान है तो माँ का स्थान तथा सम्मान इससे तीन गुना अधिक है, हज़रत अबू हुरैरा रज़ि बयान करते हैं कि एक व्यक्ति ने आ कर अल्लाह के नबी से पूछा, ''लोगों में सब से अधिक मेरे सद्व्यवहारों का अधिकारी कौन है? उत्तर मिला ''तेरी माँ'' उसने पूछा, फिर कौन? उत्तर मिला ''तेरी माँ'' उसने पूछा, फिर कौन? उत्तर मिला ''तेरी माँ'' उसने पूछा, फिर कौन? अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया ''तेरा बाप'' (बुखारी)। माँ पर तीन काल ऐसे आते हैं जिन को वह बड़े परिश्रम के साथ सहन करती है, पवित्र कुर्आन ने उनको इस प्रकार बयान किया है। अनुवादः

1. माँ ने अपने बच्चे को (कई महीनों तक) बड़े परिश्रम से अपने पेट में उठाए रखा।

2. फिर माँ ने अपने बच्चे को बड़े कष्टों और परिश्रम के साथ जन्म दिया।

3. उस गर्भ और दूध पिलाने का समय कम से कम 30 महीने हैं। (सूरतुल अहकाफ़)

माँ अपने बच्चे के लिए गर्भ के कष्टों को उठाती है उसको जनने के कष्ट उठाती है, दूध के रूप में अपना रक्त पिलाती है, यह वह कार्य हैं जिन्हें बाप नहीं कर सकता, तभी तो माँ का दर्जा बाप से तीन गुना अधिक है। सर्द रातों में वह अपने बच्चे को ओढ़ा पहना कर गर्म रखती है उसके पेशाब के गीले बिछौने पर खुद सोती है और बच्चे को सूखे बिछौने पर सुलाती है, गर्मियों में पूरी रात अपने दोपट्टे से उस को हवा देती है, जब बच्चा बड़ा होने लगता है और कुछ खाने लगता है तो उस के लिए विशेष भोजन तैयार कर के बड़े प्यार से उसे खिलाती है। जब वह बोलने लगता है तो उसकी शिक्षा का प्रबन्ध करती है। उसके नाज नखरों को सहन करती है अपने खाने से अच्छी अच्छी चीजें निकाल कर अपने बच्चे के लिए रखती है ताकि वह भूखा न रहे, दूसरे से खाने की चीजें न मांगे, दूसरों के पास अच्छी चीज़ें देख कर बच्चा ललचाए नहीं, अपनी सन्तान के लिए माँ वह सब कुछ कर गुजरती है जो उस के बस में होता है, एक लम्बे समय तक उसका पालन पोषण करती है, अपना सुख चैन, अपना विश्राम, अपना खाना पीना सब कुछ अपने बच्चे पर निछावर कर देती है, अब यहां सोचना चाहिए कि जब बच्चा जवान हो कर कमाने खाने लगता है तो वह अपने माँ–बाप के उक्त उपकारों का क्या बदला देता है? इसी अपनी माँ को, अपनी पत्नी को प्रसन्न करने के लिए अपमानित करता है यहां तक कि कभी तो घर से निकाल देता है, और वह फिर दर दर की ठोकरें खाती है। बीवी को माँ पर प्रधानता देता है स्वयं अपने माँ–बाप से दुर्व्यवहार करता है उनको अपमानित करता है।

यह दुर्व्यवहार अपने माँ–बाप के साथ हर संतान नहीं करती है परन्तु कुछ कुकर्मी संतानों से ऐसा व्यवहार देखने में आता है, ऐसी संतानों और सभी संतानों को अल्लाह तआला ने मां के उपकारों को इस प्रकार याद दिलाया है और उनके लिए दुआ करने का इस प्रकार आदेश दिया ''ऐ मेरे रब जिस प्रकार उन्होंने मेरे बाल काल में मुझे पाला है उन पर दया कर'' (बनी इस्राईलः 24)।

और आदेश दिया कि हरगिज उनको अपमानित न करना उन्होंने तुम्हारे पालन पोषण में बड़ी कठिनाईयां उठाई हैं और कष्ट सहे हैं अतः उन के साथ सद्व्यवहार करना और उनके आज्ञापालन में कोई कोताही न करना पवित्र कुर्आन में आया है, अनुवादः ''तुम्हारे रब ने फैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की उपासना न करो और माँ–बाप के साथ

अच्छा व्यवहार करो। यदि उन में से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो ऊँह ''उफ'' तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शिष्टापूर्वक बात करो'' (बनी इस्राईलः23) इस आयत और इसके बाद वाली आयत में अल्लाह तआला ने माँ बाप के छे अधिकार बयान किए हैंः–

1. ''माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार करो'' इन्सान जहां अपनी बीवी बच्चों के लिए अच्छे खाने पीने और वस्त्रों का प्रबन्ध करे तो माँ–बाप के लिए भी वैसा ही प्रबन्ध करे जो अपने लिए पसन्द करे, वही माँ–बाप के लिए भी पसन्द करे।

2. ''जब माँ–बाप बुढ़ापे को पहुंच जाएं तो उन की सेवा से उकता कर उफ तक न कहो'' इसलिए कि बुढ़ापा मानव जीवन का बड़ी निर्बलता का काल होता है जब कि संतान युवा अवस्था में होती है। अतः पवित्र कुर्आन में युवा संतान से जैसे सम्बोधित हो कर कहा हो कि ऐ युवा संतान यह तेरी युवा अवस्था भी समाप्त हो जाएगी और तू भी बूढ़ा हो जाएगा जैसे तेरे माँ–बाप बूढ़े हो गए। अगर तू चाहता है कि तेरी संतान तेरे बुढ़ापे में तेरा आदर सम्मान करे तो तू भी माँ–बाप की सेवा में ''उफ'' न कर।

3. ''और उन को झिड़को नहीं'' इस आदेश में सख़्ती से रोका गया है कि अगर माँ–बाप तुम्हारे स्वभाव के विपरीत कोई बात कह दें तो क्रोधित हो कर उन को झिड़को नहीं अन्यथा कहीं वह श्राप न दे बैठें और वह अल्लाह के यहां स्वीकार हो जाए और अल्लाह की कृपा के तमाम द्वार तुम्हारे लिए बन्द हो जाएं।

4. ''और उन से शिष्टापूर्वक बात करो'' यहां उनके सम्मान का आदेश है कि अपने माँ–बाप के साथ शिष्टा पूर्वक मीठी बोली में बात करो ताकि उन के मन को सन्तोष प्राप्त हो।

5. ''और उन के आगे दयालुता से नम्रता की भुजाएं बिछाए रखो''।

6. ''और उन के लिए दुआ करो कि ऐ मेरे रब जिस प्रकार उन्होंने बचपन में मुझे पाला है तू भी उन पर दया कर''।

(बनी इस्राईलः 24)

जीवित माँ–बाप के लिए भी दुआ करें और वफात पाए हुए माँ–बाप के लिए मगफिरत की दुआ करें, नेकियां कर के उस का सवाब उनको बख्शें उन की वसीयत को पूरा करें, उन के सम्बन्धियों से भला व्यवहार करें उनके मित्रों का सम्मान करें, सम्भव हो तो उनकी तरफ से हज करें।

हदीस में आया है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमायाः ''अगर किसी बन्दे के माँ– बाप का इन्तिक़ाल हो जाए या उनमें से किसी एक का इन्तिकाल हो जाए और वह बन्दा अपने माँ–बाप का नाफरमान रहा हो लेकिन अगर वह बन्दा अपने माँ–बाप के लिए दुआ करता रहे और अल्लाह तआला से उन के लिए मगफिरत मांगता रहे तो अल्लाह तआ़ला उस बन्दे को अपने माँ–बाप के साथ सद्व्यवहार करने वालों में लिख देंगे'' (मिशकात)। जिन लोगों से अपने माँ–बाप की सेवाओं में चूक हुई हो और उनका इन्तिक़ाल हो गया हो उनको चाहिए कि वह अपने माँ–बाप के लिए बराबर मगफिरत की दुआ करते रहें तो उम्मीद है कि अल्लाह तआ़ला उनको क्षमा कर देंगे।

अल्लाह तआला हम सबको अपने माँ–बाप का आज्ञाकारी उन का अनुकरण करने वाला उनके साथ सद्व्यवहार करने वाला उनके लिए जिन्दगी में भी दुआ करने वाला और उनकी वफात पर उनके लिए पूरे जीवन तक मगफिरत की दुआ करने वाला बनाए।

आमीन

❖❖❖

दुआ क्या है?

इं0 जावेद इक़बाल

आमतौर पर अल्लाह तआला से अपनी ज़रूरतों को मांगने का नाम दुआ है। रोगी स्वास्थ्य के लिए, निःसंतान व्यक्ति संतान के लिए, बेरोजगार व्यक्ति रोज़गार की प्राप्ति के लिए, कर्जदार क़र्ज़ की अदायगी के लिए खुदा से दुआ मांगता है। मगर यह दुआ का बहुत सीमित रूप है। हक़ीक़त में दुआ बन्दे के द्वारा अपने मालिक के प्रति अपनी बन्दगी को ज़ाहिर करने का तरीक़ा है। जब इंसान स्वयं को अल्लाह के सामने पूर्णतः विवश लाचार, बेबस, कमज़ोर और मंगता समझता है तब खुद ब खुद अपनी ज़रूरतों को पूरा कराने के लिए खुदा के सामने हाथ फैला देता है उसकी यह दशा उसकी बन्दगी का ऐलान करती है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 से बढ़ कर खुदा के सामने अपनी बन्दगी को दर्शाने वाला कोई अन्य नहीं हो सकता। आप सल्ल0 ने जिस–जिस अन्दाज़ से अपने हर छोटे बड़े काम के लिए जो दुआयें माँगी हैं, और वास्तव में अपने उम्मतियों को सिखाई हैं, उनका नमूना हमें किसी दूसरी जगह नहीं मिलता। रसूलुल्लाह सल्ल0 की दुआओं से हमें खुदा से मांगने का तरीक़ा और सलीक़ा मालूम होता है। आप सल्ल0 ने हम इन्सानों को दुआ के मार्ग से खुदा और बन्दे का सम्बन्ध एक दूसर से जोड़ने का जो तरीक़ा सिखाया है वह अद्भुत है, अनोखा है, अद्वितीय है। दुआ के द्वारा इंसान के मन में स्वयं को खुदा का मुहताज और भिखारी समझने की भावना प्रबल होती है, खुदा की सर्वोच्य शक्ति पर विश्वास दृढ़ होता है। परलोक के स्थाई जीवन पर, स्वर्ग और नरक पर यक़ीन बढ़ता है।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की सैकड़ों दुआयें हदीस की किताबों में सुरक्षित हैं। ज़िन्दगी के हर मोड़ पर हर काम के लिए, और परलोक में सफलता प्राप्त करने के लिए, स्वर्ग में प्रवेश पाने और नरक के दण्ड से बचने के लिए आप सल्ल0 ने जिस तरह रो रो कर अल्लाह से दिन और रात की प्रत्येक घड़ी में भीख मांगी है उससे स्पष्ट होता है कि आप सल्ल0 को खुदा की शक्ति और सत्ता पर कितना गहरा यक़ीन था, और क्यों न होता जब कि मेराज के सफ़र में आप सल्ल0 को सातों आसमानों की सैर करा दी गई थी, स्वर्ग के उपहार और नरक के दण्ड दिखा दिये गये थे।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की कुछ दुआयें जीवन की आम ज़रूरतों से सम्बन्धित हैं, जैसे दुश्मन के मुक़ाबले में मदद की दुआ, किसी मुसीबत को दूर करने की दुआ, रोगी के स्वस्थ होने की दुआ, कोई खुशी प्राप्त होने पर दुआ, कोई दुख पहुँचने के समय की दुआ इत्यादि।

आप सल्ल0 की कुछ दुआयें दिन रात के 24 घण्टों में आम कार्य करते समय की हैं जैसे सो कर उठने की दुआ, रात में सोते समय की दुआ, नींद न आने की हालत में दुआ, नींद में डर जाने की दुआ, सफ़र में जाते समय की दुआ, मंजिल पर पहुंचने की दुआ, नये कपड़े पहनते समय की दुआ, क़र्ज़ से छुटकारा पाने की दुआ इत्यादि।

आप सल्ल0 की कुछ दुआयें नमाज़ के समय की हैं। इन दुआओं में खुदा की बड़ाई,

उसका गुण गान, उससे माफ़ी, उससे क्षमा याचना, दोज़ख (नरक) से उसकी पनाह (शरण), स्वर्ग की इच्छा, बुराई से बचने के लिए उसका सहयोग, भले कर्मों की उससे तौफ़ीक (प्रेरणा) देने आदि की दुआ शामिल है।

आप सल्ल0 ने दुआ मांगने के केवल शब्द ही नहीं सिखाये बल्कि कहा मन की गहराई से खुदा की ओर पूर्ण ध्यान के साथ दुआ मांगी जाये और इस विश्वास के साथ मांगी जाये कि अवश्य ही कुबूल होगी। यदि किसी कारण कोई कामना हमें प्राप्त न भी हो तो भी परलोक में निर्णय के दिन उसका लाभ बन्दे को अवश्य मिलेगा। दुआ में जल्दबाज़ी भी नहीं करना चाहिए क्योंकि उचित समय का ज्ञान भी अल्लाह ही को है। सम्भव है जिस समय हम कुछ मांग रहे हों वह समय उस कामना के प्राप्त होने के लिए लाभप्रद न हो।

रसूलुल्लाह सल्ल0 ने कुछ दुआयें मांगने से मना भी किया है ऐसी दुआओं को बददुआ कहते हैं। आप सल्ल0 ने फरमाया अपने लिए या अपनी सन्तान के लिए मृत्यु की दुआ न करो, यदि तुम्हारी यह दुआ कुबूल हो गई तो फिर रोते फिरोगे।

दुआ के विषय में एक विशेष चेतावनी रसूलुल्लाह सल्ल0 ने दी है वह यह कि हराम माल खाने पीने और पहनने से दुआ कुबूल नहीं होती, चाहे वह कितना ही ध्यान पूर्वक रो रो कर और गिड़गिड़ा कर क्यों न मांगी जाये।

दुआ इतनी महत्वपूर्ण चीज़ है कि एक अवसर पर रसूलुल्लाह सल्ल0 ने कहा कि जिस व्यक्ति के लिए दुआ का दरवाज़ा खुल गया अर्थात ध्यान पूर्वक जिसे मांगने का सलीका आ गया उसके लिए अल्लाह की रहमत के दरवाज़े खुल गये।

आइये अब हम रसूलुल्लाह सल्ल0 की सिखाई हुई कुछ दुआओं का अध्ययन करते हैं और साथ ही दुआ करते हैं कि हमें भी दुआ मांगने का सलीक़ा आ जाये। आमीन।

1. ऐ मेरे अल्लाह, मैं तुझसे मांगता हूं, वह ज्ञान जो लाभप्रद हो और ऐसे कर्म जो तेरी नज़र में काबिले कुबूल (स्वीकार करने योग्य) हो और तुझसे मांगता हूँ पाक रोज़ी।

व्याख्याः— इस छोटी सी दुआ में रसूलुल्लाह सल्ल0 ने अल्लाह से वह ज्ञान मांगा है जो लाभ देने वाला हो और वे कर्म करने की प्रेरणा मांगी है जो अल्लाह के दरबार में पसंदीदा (मूल्यवान) हो और तीसरी चीज़ जो मांगी है वह पाक आजीविका। लाभप्रद ज्ञान से तात्पर्य उस ज्ञान से है जो सत्य मार्गी हो, मिथिक, गुमराह कर देने वाला न हो।

इस दुआ में भी उम्मतियों के लिए यह पैग़ाम है कि हर चीज़ खुदा के खज़ाने से ही उतरती है, इंसान के अपने वश में कुछ नहीं है। हिदायत देने वाला और गुमराही से बचाने वाला भी वही अल्लाह है अतः हमें हर समय उसी से अपनी कामनाओं को पूरा करने की भीख मांगनी चाहिए।

2. ऐ धरती और आकाशों के पैदा करने वाले, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष का सम्पूर्ण ज्ञान रखने वाले, हर चीज़ के मालिक और पालनहार, मैं गवाही देता हूँ कि तेरे सिवा कोई पूजने योग्य नहीं है, मैं तेरी शरण में आना चाहता हूँ, अपने मन की बुराइयों से और शैतान (के द्वारा सिखाई) की बुराइयों से और उसके शिर्क से (अर्थात अल्लाह के साथ किसी को साझी बनाने की ग़लती से) बचने के लिए।

व्याख्याः— इस दुआ में भी पहले अल्लाह का गुणगान है

और फिर हर बुराई से बचने के लिए अल्लाह की मदद मांगी गई है।

यह दुआ रसूलुल्लाह सल्ल0 ने हज़रत अबू बक्र रज़ि0 को सुबह और शाम को बिस्तर पर लेटते समय पढ़ने को सिखाईं।

रसूलुल्लाह सल्ल0 की यह दुआ दैनिक जीवन में विशेष महत्व रखती है–

''ऐ अल्लाह मैं तुझसे मांगता हूँ स्वास्थ्य, पाकदामिनी (सदाचार) अमानत का गुण, और अच्छे अखलाक़ (शिष्टाचार) तथा भाग्य पर सन्तुष्ट रहना''।

व्याख्याः– सभी जानते हैं कि स्वास्थ्य कितनी बड़ी नेमत है इसकी क़द्र तब ही मालूम होती है जब इंसान रोग से पीड़ित होता है, इसीलिए रसूलुल्लाह सल्ल0 ने इसे सबसे पहले नम्बर पर मांगा। सदाचार भी एक महत्वपूर्ण गुण है, यदि किसी व्यक्ति में यह गुण न हो तो वह व्यक्ति पूरे समाज को दूषित कर देता है। अमानत अरबी भाषा का एक बहुअर्थीय शब्द है, हमारी भाषा में तो केवल धरोहर की रक्षा तक ही सीमित है मगर अरबी भाषा में यह उन तमाम ज़िम्मेदारियों पर लागू होता है जो अल्लाह तआला ने बन्दों पर डाली हैं। अर्थात ''अल्लाह के द्वारा दिये गये आदेशों को भली–भांति पालन करना'', अमानत का गुण हुआ, अच्छे अख़लाक़ की अहमियत तो सब ही जानते हैं कि आपसी मेल मुहब्बत, दूसरों की सेवा, सहयोग इत्यादी

❖❖❖

पृष्ठ....07...का शेष

रसूल सल्ल0 ने फरमाया– सबसे बेहतर साथी अल्लाह के नज़दीक वह है जो अपने साथी के लिए बेहतर हो और सबसे बेहतर पड़ोसी अल्लाह के नज़दीक वह है जो अपने पड़ोसी के लिए बेहतर हो।

(तिर्मिज़ी)

साझीदारी वाली चीज़ में शुफ़अः का अधिकारः–

किसी साझीदारी या मिली हुई चीज़ को लेने या खरीदने के विशेष अधिकार हासिल होने को हक्के–शुफ़अः या शुफ्अः का अधिकार कहा जाता है।

हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ि0 से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने हर ऐसी साझे वाली चीज़ में शुफ्अः का फैसला दिया जिसका विभाजन न हुआ हो, चाहे वह जानदार हो या बाग–बगीचा, जब तक अपने साझीदार को मालूम न करा दे बेचना दुरुस्त नहीं है, चाहे वह साझीदार खरीदे या छोड़ दे, अगर उसने अपने साझीदार को बताए, बिना बेच दिया तो वही उसका ज़्यादा हकदार है।

(मुस्लिम)

पड़ोसी को भी शुफ्अः का हक होता हैः–

हज़रत अम्र बिन शरीद रज़ि0 से रिवायत है कि हज़रत मिस्वर बिन मखरमा रज़ि0 आये और मेरे कंधे पर हाथ रखा, मैं उनके साथ हज़रत सअद रज़ि0 के पास गया, हज़रत अबू राफिअ रज़ि0 ने हज़रत मिस्वर से कहाः क्यों आप इन से नहीं कहते कि यह मेरा वह मकान खरीद लें जो इनके घर से मिला हुआ है, (हज़रत अम्र बिन शरीद ने) कहाः मैं चार सौ से ज़्यादा नहीं दूंगा, चाहे किस्तों में ले लो या एक साथ ले लो, उन्होंने कहा पाँच सौ इकट्ठा मिल रहा था और मैंने उसको नहीं बेचा, अगर मैंने अल्लाह के रसूल सलल0 से न सुना होता कि पड़ोसी को शुफ्अः का हक होता है तो मैं आपके हाथ न बेचता।

(बुखारी)

❖❖❖

आपके प्रश्नों के उत्तर

—मुफ़्ती मुहम्मद ज़फर आलम नदवी

प्रश्नः एक शख्स ने किसी बात पर गुस्से में कहा कि मेरे लिए बकरी पालना और बकरी का गोश्त खाना हराम है, क्या वह शख्स बकरी पाल सकता है और उसका गोश्त खा सकता है?

उत्तरः अगर कोई शख्स कोई हलाल चीज अपने ऊपर हराम कर लेता है तो उस के हराम करने से वह चीज उस पर हराम न होगी बल्कि उस का इस्तेमाल उस के लिए जाइज़ रहेगा अलबत्ता वह उसके इस्तेमाल पर चूंकि हानिस (कसम तोड़ने वाला) होगा इस लिए उस पर कसम तोड़ने का कफ़्फ़ारा अदा करना जरूरी है।

(रद्दुल मुहतारः 3/63)

प्रश्नः एक शख्स ने मन्नत मानी कि अगर मुझे सड़क बनवाने का ठेका मिल गया तो मैं मस्जिद में मनारा बनवा दूंगा, उसे ठेका मिल गया तो क्या उस पर मस्जिद में मनारा बनवाना जरूरी है?

उत्तरः नज़्र वाजिब होने के लिए जरूरी है कि जिस चीज़ की नज़्र मानी है वह इबादत मकसूदा हो मनारा बनवाना इबादते मकसूदा नहीं है इसलिए मनारा बनाना ज़रूरी नहीं है बेहतर यह है कि मनारा बनवाने में जितनी रकम खर्च होती उतनी रकम किसी मस्जिद की तामीर में खर्च कर दे।

(रद्दुल मुहतारः 5/516)

प्रश्नः एक शख्स के पास कपड़ों की बड़ी दुकान है उस ने इरादा किया था कि इन कपड़ों से जो टुकडे बचेंगे उन के बेचने से जो रकम आएगी उस को गरीबों और मिस्कीनों पर खर्च करूंगा उस के पास बहुत से लोग मस्जिद की तामीर के लिए चन्दा मांगने आते हैं क्या वह उन टुकड़ों की कीमत में से मस्जिद की तामीर में चन्दा दे सकता है?

उत्तरः जब उस शख्स ने कहा कि बचे हुए टुकड़ों की कीमत ग़रीबों पर तक्सीम करूंगा तो अब यह रक़म ग़रीबों और फक़ीरों ही पर खर्च होगी। मस्जिदों की तामीर पर खर्च न होगी इसलिए कि मस्जिदों से फाइदा उठाने वाले अमीर व गरीब सब होते हैं।

(रद्दुल मुहतारः 2/339)

प्रश्नः आ़क़िला बालिग़ा (बुद्धिमान तथा व्यस्क) लड़की के निकाह के लिए उसके गैर वली रिश्तेदार ने उस से मुतअ़य्यन (निश्चित) महर पर मुतअय्यन शख्स से निकाह की इजाज़त मांगी लड़की ने कहा इजाज़त है, इजाज़त लेने वाले ने मस्जिद में जा कर नमाज़ियों के सामने एक आलिम से निकाह पढ़वा दिया यह निकाह दुरूस्त हुआ या नहीं? बाज लोग कहते हैं कि इजाज़त लेने के वक्त दो मर्द गवाह न थे इस लिए निकाह दुरुस्त नहीं हुआ सहीह क्या है?

उत्तरः वकालते निकाह अर्थात निकाह की इजाज़त लेते वक्त और इजाज़त देते वक्त गवाह जरूरी नहीं है ज़्यादा से ज़्यादा मुस्तहब है इसलिए अगर इजाज़त लेने वाले शख्स ने उस लड़की का बाकाइदा मजलिसे निकाह में गवाहों की मौजूदगी में निकाह पढ़वा दिया तो निकाह सही और दुरुस्त हो गया।

(अलहिन्दीयाः 1/294)

प्रश्नः आकिला बालिग़ा कुंवारी लड़की से उसके निकाह के लिए गैर वली रिश्तेदार ने उससे दो गवाहों की मौजूदगी में मुतअय्यन महर पर मुतअय्यन शख्स से निकाह की इजाज़त मांगी लड़की जवाब में खामोश रही इजाज़त मांगने वाले ने उस की खामोशी को इजाज़त मान कर के मस्जिद में जा कर नमाजियों के सामने एक आलिम से निकाह पढ़वा दिया और लड़की शौहर के साथ रुख्सत कर दी गई लड़की अपने शौहर से खुशी के साथ हम कनार हुई यह निकाह सही हुआ या नहीं?

उत्तरः आकिला बालिग़ा कुंवारी लड़की से अगर गैर वली निकाह की इजाज़त मांगे तो सय्यिबा (विवाहिता औरत जो बेवा हो गई हो या तलाक़ हो गई हो) की तरह उस को भी ज़बान से कह कर इजाज़त देना जरूरी है अगर गैर वली ने इजाज़त तलब की और लड़की उस वक्त खामोश रही उस ने खामोशी को इजाज़त समझ कर निकाह पढ़ा दिया तो अगर उस के बाद लड़की शौहर के साथ रुखसत हो कर चली गई और उसने शौहर को खुशी के साथ कुदरत (मिलाप की अनुमति) दे दी तो यह भी रजामन्दी की दलील होगी और निकाह दुरुस्त समझा जाएगा।

(अद्दुर्रुलमुख़्तारः 4/164)

प्रश्नः कुर्आन मजीद की कसम खाना या कुर्आन सर पर रख कर या हाथ में ले कर किसी बात का वादा करना दुरुस्त है या नहीं?

उत्तरः कुर्आन मजीद अल्लाह तआला की मुक़द्दस किताब है, मामूली कामों और बातों के लिए इस का इस्तेमाल खिलाफे अदब है, कसम खानी हो तो अल्लाह के नाम की कसम खाए, लेकिन अगर कुर्आन उठा कर कसम खाते हैं तो कसम हो जायेगी और जो इरादा क़सम से किया है उस का पूरा करना जरूरी होगा। अल्लामा इब्नि नुजैम ने ऐसा ही लिखा है।

(अल बहर्रुाइकः 4/482)

प्रश्नः एक लड़के ने कसम खाई कि वह शादी नहीं करेगा मगर बाप उसे शादी करने पर मजबूर कर रहे हैं, अब अगर वह मां बाप की इताअत में शादी कर ले तो उस को क्या करना पड़ेगा?

उत्तरः शादी न करने की कसम खाना दुरुस्त नहीं है, उस को चाहिए कि मां बाप की इताअत में शादी कर ले और कसम का कफ़्फ़ारा अदा करे कसम का कफ़्फ़ारा दस मिस्कीनों को दोनों वक्त खाना खिलाना है या दस मिस्कीनों को कपड़े पहनाना है, अगर इन दोनों बातों पर कुदरत नहीं है तो मुसलसल एक साथ तीन रोज़े रखे।

(किताबुल फतावाः 6/31)

प्रश्नः दो मुसलमानों ने आपस में मुआहदा किया कि वह हमेशा साझे में कारोबार करेंगे और साझे में कारोबार की शुरुआत कर दी लेकिन कुछ दिनों के बाद दोनों में अन बन हो गई और दोनों ने अलग अलग कारोबार शुरु कर दिया, इस मुआहदा को तोड़ने पर उन को क्या करना होगा?

उत्तरः अगर सिर्फ वादा किया था मगर कसम नहीं खाई थी तो वादा तोड़ने का गुनाह हुआ इस पर तौबा व इस्तिगफार लाज़िम है, अगर मुआहदा तोड़ने का माकूल सबब था तो गुनाह नहीं हुआ। बेसबब मुआहदा करके मुआहदा न तोड़ना चाहिए। लेकिन अगर मुआहदा करते वक्त कसम भी खाई थी तो मुआहदा तोड़ने पर कसम का कफ़्फ़ारा देना होगा।

प्रश्नः एक शख्स से कोई गलती हुई लेकिन उस ने भरी मजलिस में कसम खा ली कि उसने गलती नहीं की है लेकिन अब वह शर्मिन्दा है क्या उस को झूठी कसम खाने पर कसम का कफ़्फ़ारा देना होगा?

उत्तरः झूठी कसम खाना बड़ा गुनाह है झूठी कसम खाने वाले को इस पर तौबा व इस्तिगफ़ार करना चाहिए लेकिन किसी गुजरी हुई बात पर झूठी कसम खाने का कफ़्फ़ारा नहीं है।

(मुलतक़ा अल अब्हरः 260/261)

प्रश्नः क्या नाबालिग बच्चे की कसम का एतबार होगा अगर नाबालिग बच्चा अपनी कसम तोड़ दे तो उसे क्या करना होगा?

उत्तरः कसम के मोतबर (विश्वस्त) होने के लिए यह शर्त भी है कि कसम खाने वाला बालिग हो, ना बालिग की कसम का शरीअत में कोई एतिबार नहीं है, यानी ना बालिग़ की कसम कसम नहीं है।

प्रश्नः कफ़्फ़ारा किसे कहते हैं?

उत्तरः कफ़्फ़ारा ऐसे काम को कहते हैं जो गुनाह के असर को मिटा दे, और आदमी को उस गुनाह से पाक कर दे।

(किताबुल फतावाः 6/40)

प्रश्नः क़सम के कफ़्फ़ारे में क्या चीज़ देनी पड़ती है?

उत्तरः क़सम के कफ़्फ़ारे में दस गरीब मुसलमानों को दोनों वक्त पेट भर के खाना खिलाना या दस गरीब मुसलमानों को कपड़े पहनाना है अगर इन दोनों कामों पर कुदरत नहीं हो तो तीन रोजे मुसलसल रखना है।

प्रश्नः जुमे के दोनों खुतबों के बीच में बैठने का क्या हुक्म है?

उत्तरः जुमे की नमाज़ से पहले दो खुत्बे देना मस्नून है और दोनों खुतबों के बीच में तीन आयतें पढ़ने के बक़द्र बैठना सुन्नते मुअक्कदा है, लिहाजा अगर दोनों खुतबों के बीच में तीन आयतों के पढ़ने के बकद्र न बैठे गा तो उस पर सुन्नते मुअक्कदा छोड़ने का गुनाह होगा मगर जुमे की नमाज़ हो जाएगी।

(रद्दुल मुहतारः 3/20)

प्रश्नः जुमे का खुतबा शुरु हो जाने के बाद जुमे की नमाज़ से पहले की सुन्नतों का पढ़ना दुरूस्त है या नहीं? मस्जिदों में देखा जाता है कि बाज लोग दौराने खुतबा भी सुन्नतें पढ़ते हैं क्या यह शरीअ़त में मना नहीं है? इस तरह खुतबे से पहले जो बयान होता है उस दौरान सुन्नत नमाज़ पढ़ी जा सकती है या नहीं?

उत्तरः हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि0 और हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि0 के बारे में रिवायत है कि उन के निकट जैसे ही इमाम खुतबे के लिए निकलता है उस वक्त से ही बातें करना या नमाज़ पढ़ना दुरुस्त नहीं है इन हज़राते सहाबा की यही राय थी मुसन्नफ अबी शैबा में सराहत है, अनुवादः ''सहाबा रज़ि0 इमाम के खुतबे के लिए निकलने के वक्त से बात चीत करने और नमाज़ पढ़ने को मकरूह जानते थे''।

(नस्बुर्रायः ब हवाला मुसन्नफ अबी शैबाः 2/202)

इसलिए खुतबा शुरूअ़ हो जाने के बाद तहीयतुल मस्जिद या जुमे की सुन्नतें नहीं पढ़ना चाहिए अल्बत्ता खुतबे से पहले जो तकरीर होती है उसके दौरान सुन्नत नमाजें पढ़ी जा सकती हैं इसलिए कि वह तकरीर, जुमे के खुतबे के हुक्म में नहीं आती है।

❖❖❖

रहम

नजमुस्साक़िब अब्बासी नदवी

हज़रत ख़्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह0 अल्लाह के उन बन्दों में से थे जो उसके बन्दों पर खूब खर्च किया करते थे। खुद रूखी–सूखी खाते बल्कि अक्सर रोज़ा रखते। ऐसा नहीं था कि गरीब और घर में खाने को कुछ नहीं था, बल्कि घर में इतना था कि मेहमानों के लिए कई कई डेगें रोज़ाना आग पर चढ़ी रहती थीं। दूर दूर से लोग हज़रत के दस्तरख़्वान से लुत्फ लेने आते थे। लेकिन हज़रत ख़्वाजा साहब रह0 का हाल ये था कि खौफ़े खुदा में इतना डूबे रहते कि रूखी–सूखी पर ही गुज़ारा करते। इन सबकी वजह से हाल ये हो गया था कि वह हड्डियों का एक ढ़ाँचा बन कर रह गये थे। वह कहते थे कि अल्लाह जब दे तो उसके बन्दों को खिलाना और सेवा करनी चाहिए।

हज़रत ख़्वाजा यद्यिपि खान पान की सही मात्रा न मिलने से सूख कर कांटा हो गये थे मगर ईमानी ताक़त में तनिक भी कमज़ोरी नहीं आई थी और ईमानी कुव्वत और दूर दृष्टि की झलक देखते हैं।

एक बार बैठ कर लोगों को अल्लाह और रसूल की बातें बता रहे थे, तभी एक आदमी आस्तीन में खंजर छुपाए उनकी मजलिस में बैठने की जगह बनाने लगा। दरअसल ये व्यक्ति हज़रत ख़्वाजा को मारने आया था। उसे वहां के राजा ने भेजा था।

हुआ यूँ कि जब वहां के राजा ने देखा कि ख़्वाजा साहब यहां आ बसे हैं, बड़ी सीधी सादी ज़िन्दगी बसर कर रहे हैं, और लोगों को सीधा और सच्चा रास्ता दिखाते हैं, खुद भूखे रह कर दूसरों को खाना खिलाते हैं एक बड़ा वर्ग इनका प्रशंसक बनता जा रहा है और इनकी कथनी करनी में कोई अन्तर न पाकर इस्लाम धर्म कुबूल कर रहा है। बस इसी खुन्नस में उसने अपने एक राज़दार सिपाही को बुलाया और कहा जाओ और इनको निपटा दो। क्योंकि उसने जात–पात की रेखाएं मिटाकर राजा–प्रजा में भेद ही मिटा दिया है। कहता है कि जो कल्मा पढ़े और मुसलमान बन जाए वह दूसरे मुसलमान का भाई है चाहे वह कैसा भी हो। जाओ उसका काम तमाम करो, हमारी प्रजा बड़ी तेज़ी से उसकी बातों में आ रही है, यदि ये क्रम चलता रहा तो कोई हमें पूछेगा भी नहीं।

अन्तिम सन्देष्टा हज़रत मुहम्मद सल्ल0 के अभ्यूदय के पश्चात जब इस्लाम की किरणें भारत में पहुंची तो लोगों ने उसे हाथों हाथ लिया। कारण! उस समय भारत जात–पात और भेदभाव की महामारी से जूझ रहा था और सामाजिक ताना बाना छिन्न भिन्न हो गया था। ऐसे में अन्याय की तपती रेत में इस्लाम बारिश बनकर आया और उसकी इंसानियत की घटाएं पूरे भारत में छा गईं।

इतिहास की सबसे हास्यास्पद बात ये है कि इस्लाम तलवार से फैला तो फिर हज़रत ख़्वाजा के हाथों में कौन सी तलवार थी? जबकि उनके हाथों

शेष पृष्ठ ...38..पर

औरतें आर्थिक सरगर्मियों में आगे आएं

डॉ0 मुहियुद्दीन ग़ाज़ी

अल्लाह के रूसल सल्ल0 ने जो समाज बनाया था, उस में मुसलमान औरतें तिजारत भी करती थीं, खेती और बागबानी भी देखती थीं, और कई घरेलू कारोबार भी अपनाती थीं। कुछ मिसालें हम यहां पेश करेंगे:

एक सहाबिया क़ीला अनमारिया तिजारत करती थीं, उन्होंने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से तिजारत के बारे में सवाल किया, आपने उनकी रहनुमाई फ़रमाई। हज़रत अनस बिन मालिक नबी सल्ल0 के ज़माने की एक औरत का ज़िक्र करते हैं, जिसका नाम हौला था और वे इत्र की तिजारत करती थीं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह अपनी खाला का जिक्र करते हैं, जिनकी तलाक़ हो गई थी, और वह अपने खजूर के बाग़ में जा कर खजूर तोड़ना चाहती थीं, लोगों ने मना किया, फिर अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने इजाज़त दी, और कहा कि आप अपनी खजूरें तोड़ लें, उम्मीद तो यही है कि आप सदक़ा करेंगी या भलाई का कोई काम करेंगी।

(सही बुख़ारी)

हज़रत अस्मा बिन्ते उमैस हज़रत जाफ़र बिन अबी तालिब की बीबी थीं। जिस दिन हज़रत जाफ़र की शहादत की ख़बर आई, अल्लाह के रसूल सल्ल0 उनके घर पहुँचे, तो उनके अनुसार उस दिन उन्होंने चालीस खालों को प्रोसैस किया था।

जब अल्लाह के रसूल सल्ल0 ख़ैबर फ़त्ह करने निकले, तो हज़रत उम्मे सिनान असलमिया आपकी ख़िदमत में आईं और कहा, ऐ अल्लाह के रसूल, मैं इस सफ़र में आपके साथ निकलना चाहती हूं ताकि मुजाहिदीन के लिए मश्कीज़े सिलूं, मरीज़ों की तीमारदारी करूं और अगर कोई जखमी हो जाए तो उसके ज़ख़्मों का इलाज करूं। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उन्हें इजाज़त दे दी।

(तबाकातुल कुबरा)

आर्थिक सरगर्मी के बहुत से पहलू:–

आर्थिक सरगर्मी का मतलब केवल कमाना नहीं है। मिल्लत के आर्थिक पिछड़ेपन को दूर करने की कोशिशों में शामिल होना बहुत अहम और ज़रूरी आर्थिक सरगर्मी है। एक माँ जब अपने बच्चों के अंदर कमाने का हौसला पैदा करती है, एक बीवी जब अपने शौहर के लिए कमाने के अमल को आसान बनाती है, एक औरत जब कुछ औरतों को कारोबार की तालीम देती है, एक औरत जब दूसरी औरतों को फुजूलख़र्ची के रास्तों से रोकने की कोशिश करती है और दौलत को सही रास्तों पर ख़र्च करने की तरग़ीब देती है, तो ये सब औरतें आर्थिक सरगर्मी में हिस्सा ले रही होती हैं। इसी तरह सही जगह ख़र्च करना भी उम्दा आर्थिक सरगर्मी है। दौलत कमाने के अमल में सभी औरतें शामिल नहीं हो सकती हैं, लेकिन दौलत खर्च करने के अमल में तो हर औरत शरीक होती है। खूबी के साथ खर्च करना अहम आर्थिक सरगर्मी है, जिसमें हर मुस्लिम औरत को मुमताज़ होना चाहिए।

औरतों के लिए आर्थिक सरगर्मी के नये मौक़े:–

आर्थिक सरगर्मियों में मुस्लिम औरतों की शिरकत आज के माहौल में अनोखी बात नहीं है। जिन इलाक़ों में घरेलू कारोबार होते हैं वहां औरतें भी मर्दों का हाथ बटाती हैं।

अलबत्ता नये ज़माने ने आर्थिक सरगर्मी के जो नये मैदान पैदा किये हैं उनके सिलसिले में झिझक और तरद्दुद की कैफ़ियत पाई जाती है। उनमें से कुछ मैदान ऐसे हैं जहां औरत के लिए शर्म व हया की हिफ़ाज़त करना मुश्किल होता है। मिला जुला माहौल होता है। जहां बेहूदा हंसी मज़ाक़ एक आम बात होती है। ऐसे मैदानों से दूर रहना ही परहेज़गारी है। लेकिन बहुत से मैदान ऐसे भी हैं जहां औरत इस्लामी तौर तरीक़ों के साथ रह सकती है। दूसरी बात यह है कि कुछ आर्थिक सरगर्मीयां वे हैं जिन्हें औरत केवल अपनी आर्थिक ज़रूरतों के लिए अंजाम देती है, जब कि कुछ सरगर्मियां ऐसी हैं जिनसे उसे आर्थिक फ़ायदा ज़रूर पहुंचता है लेकिन उनका सामाजिक पहलू भी होता है। महिला समाज को इलाज करने वाली औरत की ज़रूरत है, स्कूलों में पढ़ाने के लिए टीचर की ज़रूरत है, ज़िन्दगी के कई मैदानों में औरतों की रहनुमाई *(Consultancy)* के लिए माहिर और तजुर्बेकार औरतों की ज़रूरत है। ज़िन्दगी की बहुत सी पेचीदगियों से निपटने के लिए कौंसिलिंग की माहिर औरतें दरकार हैं। ऐसी सरगर्मियों के लिए खुद को तैयार करना और उन्हें बेहतर तरीक़े से अंजाम देना समाज की बहुत बड़ी ख़िदमत होगी।

सोशल मीडिया ने आर्थिक सरगर्मियों के लिए बहुत से नये मैदान पैदा किए हैं। अब औरतें घर बैठे कपड़े, स्कूल स्टेशनरी, किताबें और दीगर सामान बेचती हैं। बहुत सी औरतें घर में केक और दूसरे बेकरी आइटम बनाकर उनकी बिक्री करती हैं। टाइपिंग और तर्जुमे का काम भी घर बैठे हो रहा है। ऑनलाइन कौंसलिंग और तालीम भी घर पर रह कर की जा रही है। यानी घर के अंदर रहते हुए औरतों के लिए बहुत सी आर्थिक सरगर्मियों को अंजाम देना मुम्किन हो गया है।

बढ़ती हुई ज़िन्दगी की ज़रूरतें और आसमान छूती महंगाई बार–बार औरतों को आर्थिक अमल में शरीक होने के लिए उकसाती हैं और इस्लामी अक़दार का लिहाज़ करते हुए इसमें कोई हर्ज भी नहीं है। इस्लामी इतिहास में इसकी मिसालें हैं कि औरतों ने ज़रूरत पड़ने पर अपने घर वालों को आर्थिक सहारा दिया। हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद तंगहाल थे, उनकी बीवी ने अल्लाह के रसूल सल्ल0 से मालूम किया कि क्या वे अपने शौहर और बच्चों पर अपने माल में से ख़र्च कर सकती हैं, क्या इसमें उन्हें सदक़े का सवाब हासिल होगा। अल्लाह के रसूल सल्ल0 ने उनकी हिम्मत बढ़ाई और कहा, ''तुम्हारे शौहर और तुम्हारे बच्चे तुम्हारे सदक़े के ज़्यादा हक़दार हैं''। (बुख़ारी)

यह इस्लाम की खूबी है कि एक औरत जब तंगहाली की सूरत में अपने शौहर और बच्चों पर खर्च करती है तो यह केवल दुनिया की एक सरगर्मी नहीं होती है बल्कि उसे सदक़े का सवाब भी मिलता है। इस ज़माने की इस्लामी तहरीक़ में भी इसकी मिसालें मौजूद हैं कि तहरीकी मसरूफ़ियत की वजह से शौहर के लिए आर्थिक खुशहाली का इंतिज़ाम मुम्किन नहीं था, तो बीवी ने मेहनत करके घर की बहुत सी ज़रूरतों और बच्चों के तालीमी ख़र्चों का इंतिज़ाम किया।

औरतों के बाज़ार का तसव्वुर दुनिया के कई समाजों में पाया जाता है, जहां सामान बेचने वाली केवल औरतें होती हैं। मणिपुर का ज़नाना बाज़ार ऐमा कैथल दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे पुराना ज़नाना बाज़ार माना जाता है, जो पाँच सौ साल पुराना है और वहां

लगभग साढ़े तीन हज़ार औरतें ऑन रिकार्ड तिजारत करती हैं, जब कि ऐसी हज़ारों औरतें हैं जो बिना लाइसेंस के भी अपना सामान ला कर बेचा करती हैं।

मुसलमान औरतों की आर्थिक सरगर्मी की एक खूबसूरत मिसाल तुर्की के बार्टन शहर का ज़नाना बाज़ार है। ये बाज़ार दो सौ साल पहले क़ायम हुआ और अभी तक उसकी चमक–दमक बाक़ी है। यह बहुत बड़ा बाज़ार है और पूरे हफ़्ते खुला रहता है। इस की खासियत यह है कि इसमें सभी ताजिर औरतें हैं। ये औरतें अपने बाग़ों और खेतों से तोड़ कर लाए हुए ताज़ा फल और सब्ज़ियां यहां बेचती हैं। ये औरतें तिजारती सरगर्मियों के साथ अपनी तहज़ीब व सक़ाफ़त की नुमाइंदगी भी करती हैं। इसी तरह कई सौ साल पुराना एक ज़नाना बाज़ार सल्तनत उमान के शहर सुनाव में है, जो केवल जुमेरात को खुलता है और उसमें औरतें ज़रूरत के सामान बेचती हैं। दूसरे मुस्लिम देशों में भी ज़नाना बाज़ारों की मिसालें मिलती हैं। यह कि अगर औरतें चाहें तो वे इज्तिमाई तौर पर छोटे सही ऐसा बाज़ार भी क़ायम कर सकती हैं, जहां वे अपनी आर्थिक सरगर्मियां इत्मीनान के साथ अंजाम दे सकें।

अल्लाह ने आपको दौलतमंद बनाया:–

अल्लाह तआला ने अपनी ओर से औरतों के लिए आर्थिक पूंजी का इंतिज़ाम किया है, दुनिया का निज़ाम यह है कि सब लोग कमाते हैं, कुछ न कुछ पूंजी जमा करते हैं और आने वाली नस्ल के हवाले करके इस दुनिया से विदा हो जाते हैं कि उनके बाद उनके वारिस उस पूंजी से अपनी ज़रूरतें पूरी करें और अपनी अगली नस्ल के लिए और ज़्यादा पूंजी छोड़ कर जाएं। बहुत से समाजों में यह पूंजी केवल मर्दों को मिलती है, औरतों को उसमें से कुछ नहीं मिलता। इस्लाम का निज़ामे विरासत मर्दों के साथ औरतों का भी हिस्सा मुक़र्रर करता है। विरासत का रुख़ जिधर भी हो वह मर्दों और औरतों दोनों को फ़ायदा देता है। बेटे के साथ बेटी, बाप के साथ माँ और भाई के साथ बहन को विरासत में हिस्सा ज़रूर मिलता है। बीवी की मौत की हालत में शौहर को और शौहर की मौत की सूरत में बीवी को इसके तर्के में से हिस्सा मिलता है।

अल्लाह ने विरासत का निज़ाम जिस तरह बनाया है उसी तरह उसपर अमल भी होना चाहिए। अगर किसी समाज में औरतें अपना हिस्सा न लें और माफ़ कर दें और यही रिवाज बन जाए तो इसका साफ़ मतलब यह है कि यह रिवाज अल्लाह के क़ानून के मुताबिक़ नहीं बल्कि उसके बरख़िलाफ़ है। ऐसे रिवाज को तोड़ना हर मुसलमान मर्द व औरत की ज़िम्मेदारी है।

इसी तहर निकाह के समय बीवी के लिए मह्र मुक़र्रर करने का हुक्म अल्लाह की ओर से दिया गया है। इसका तक़ाज़ा यह है कि आम रिवाज मह्र मॉफ़ करने का नहीं बल्कि मह्र अदा करने और वसूल करने का होना चाहिए।

इन्सानी समाज में औरत के साथ जुल्म की एक वजह यह भी होती है कि वह बिलकुल ख़ाली हाथ होती हैं और पूरे तौर पर किसी मर्द की कमाई पर निर्भर होती हैं। चाहे वह शौहर हो, भाई हो या उसकी अपनी औलाद हो। खाली हाथ औरत खुद को कमज़ोर और बेबस महसूस करती हैं। जबकि अगर औरत के पास दौलत हो तो वह मज़बूत पोजीशन में होती है और उसके जुल्म का निशाना बनने का इम्कान कम हो जाता है।

शेष पृष्ठ ...40..पर

–पिछले अंक से आगे.....

घरेलू मसायल

मौलाना मुहम्मद बुरहानुद्दीन सम्भली रह0

अनुवादः मौ0 मु0 जुबैर अहमद नदवी

औरत का विरासत में शरई हकः–

दुनिया के किसी धर्म, देश और कौम ने औरत को विरासत का हकदार नहीं करार दिया है, लेकिन इस्लाम ने औरत को भी विरासत का हकदार करार दिया है, और इस बारे में उम्र, लिंग और नंबर का भी अन्तर नहीं किया (मिसाल के तौर पर पहली ही औलाद को विरासत मिलती या बेटे को ही मिलती बाकी को न मिलती) क्यों कि जब हकदार होने में औलाद बराबर है तो उसकी बुनियाद पर मिलने वाले हक् में फरक क्यों हो ।

पुराने जमान–ए– जाहिलीयत में अरब ही नहीं, नए जमान–ए–जाहिलीयत में भी विकसित समझी जाने वाली बहुत सी युरोपियन और दूसरी कौमें बड़े लड़के को ही विरासत का अकेला हकदार करार देती रही हैं, जब कि सद्बुद्धि और मानव प्रकृति के लिहाज से ये बिल्कुल उलट तर्क मालूम होता है, यानी औलाद के बीच फरक करना जरूरी होता तो उलट क्रम होता कि छोटों या छोटे को मिलती। सच कहा है, छठी सदी हिजरी के एक मशहूर मालिकी आलिम काजी अबूबक्र इब्ने अरबी (मृत्यु 543 हिजरी) ने।

अनुवादः–"कमजोर और कम उम्र वारिस तो ताकतवर वारिसों के मुकाबले में माल के ज़्यादा जरूरतमन्द और हकदार होते हैं, लेकिन जाहिलों ने क्रम उलट कर रख दी है"। (अहकामुल कुरआनः जिल्द1, पृष्ठ–126)

बहरहाल इस्लाम ने औलाद में से हर एक को वारिस माना है और विरासत का हकदार करार दिया है ।

इस्लाम में विरासत की व्यवस्था :–

इस्लामिक विरासत व्यवस्था की बुनियाद – जैसा कि इमाम गजाली (मृत्युः 505 हि0) ने बताया है कि वह नसब और सबब पर है, (अल–वजीजः जिल्दः1, पृष्ठः 260) नसब का मतलब खानदानी बुनियाद पर और सबब का मतलब शादी वाले रिश्ते और गुलाम आजाद करने वाले सबब से विरासत पाना है, इस व्यवस्था के अनुसार औरतों में माँ, बेटी, बीवी किसी हाल में विरासत से महरूम नहीं रह सकतीं, इनके अलावा बहुत सी हालतों में पोती, दादी, नानी, बहन (तीनों तरह की) बल्कि कुछ हालतों में फूफी और नवासी भी विरासत पाने की हकदार होती हैं। (तफसील केलिए विरासत की बड़ी किताबें देखें जैसे सिराजी)।

इस्लामिक कानून में औरतों को सब से ज़्यादा अधिकार दिए गए (गैर मुस्लिमों ने भी माना है):–

औरतों के अधिकारों के लिहाज का जहां तक संबंध है इसके बारे में बहुत से न्यायप्रिय जानकार गैर मुस्लिमों ने भी खुले तौर पर माना है कि इतने अधिकार किसी कानून में नहीं दिए गए जितने इस्लामी शरीयत ने उसे दिए हैं, इस बात की ताजा गवाही पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी का वो ऐतराफ़ है जो उन्होंने सुप्रीम कोर्ट के शाहबानो केस में तलाक़ शुदा महिला के भरण पोषण से संबंधित फैसले के खिलाफ मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड की तरफ से बोर्ड के सदर हजरत मौलाना अबुल हसन अली नदवी (रह0) की सरपरस्ती में चलाए गये आंदोलन के दौरान मुस्लिम उलमा के जरिये शरई कानून से अवगत होने के बाद जनवरी 1986 में अपने एक समाचार पत्र को दिए इन्टरव्यू के अंदर ये कहते हुए

किया "इस्लामिक कानून हमारे कानून से बढ़ कर महिलाओं के अधिकारों और हितों की गारंटी देते हैं"। (करवाने जिंदगी, जिल्दः 3, पृष्ठः140) (इनके अलावा दूसरे जानकार गैर मुस्लिमों की गवाही और ऐतराफ के लिए देखिए 1995 में अहमदाबाद के अधिवेशन में मौलाना अबुल हसन अली नदवी द्वारा दिया गया अध्यक्षीय भाषण) करीब करीब इसी तरह का व्यवहारिक स्वीकारोक्ति उनकी माँ इंदिरा गांधी ने अपने प्रधानमंत्री काल में (1973 या 1974) सी0 आर0 पी0 सी0 की धारा संख्या 127 में संसद के द्वारा संशोधन करवाया था, जब उन्हें मुस्लिम उलमा के जरिये मालूम हुआ कि मुसलमान की बीवी को पति की तरफ से सभी जरूरी खर्चे (खाना, कपड़ा और आवास आदि) के अलावा महर के नाम से भी एक राशि का हक् हासिल होता है, जो आम तौर पर बड़ी राशि होती है तो वो ये जान कर न सिर्फ हैरान बल्कि इतना प्रभावित हुईं कि उन्होंने मुसलमान तलाक शुदा औरत को आजीवन (या दूसरी शादी तक) खर्चा दिलाने वाली धारा को मुसलमान औरतों के हक में उल्लेखित संशोधन से सीमित करवा दिया। (विवरण के लिए देखिए तीन दिवसीय पत्र "दावत" का मुस्लिम पर्सनल लॉ नंबर), लेकिन इस संशोधन की उपयोगिता को विभिन्न हाई कोर्टों के जजों ने अपनी व्याख्याओं के जरिये कम बल्कि खत्म कर दिया और रही सही कसर सुप्रीम कोर्ट के शाहबानो केस के फैसले ने 1985 में पूरी कर दी, जिसकी भरपाई करने में मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड को बहुत मेहनत करनी पड़ी, उसके बाद संसद से जो नया कानून पास हुआ, उससे भी आंशिक ही भरपाई हो सकी, मगर उसे भी कई हाई कोर्टों के अनेक न्यायमूर्तियों ने अपने फैसलों से बे असर कर दिया।

मुस्लिम पर्सनल लॉ के यूं तो बहुत से अंशों पर आपत्ति जताई जाती है, और उन्हें अत्याचारपूर्ण और महिला अधिकारों का हनन करने वाला बताया जाता है, लेकिन उनमें तलाक़, बहुविवाह और विरासत के क़ानूनों को खासतौर पर निशाना बनाया जाता है, जब कि जो वास्तवित्तवादी और न्यायप्रिय इनका गहन अध्ययन करेगा वो माने बिना नहीं रह सकेगा कि उनसे ज़्यादा संतुलित न्यायसंगत कोई कानून नहीं और मानव प्रकृति का इतना लिहाज किसी भी दूसरे कानून में नहीं मिलती लेकिन अधूरा अध्ययन या पक्षपात के ऐनक से वो ऐसे नज़र आयें तो हैरत की बात नहीं!

❖❖❖

गर्मी का मौसम

—मोलवी इस्माईल मेरठी

मई का आन पहुँचा है महीना
बहा चोटी से ऐड़ी तक पसीना
बजे बारा तो सूरज सर पे आया
हुआ पैरों तले पोशीदा साया
चली लू, और तड़ाक़े की पड़ी धूप
लपट है आग की गोया बड़ी धूप
ज़मीन है या कोई जलता तवा है
कोई शोला है या पछुवा हवा है
दरो दीवार हैं गर्मी से तपते
बनी आदम हैं मछली से तड़पते
परिन्दे उड़ के हैं पानी पे गिरते
चरिन्दे भी हैं धूप साऐ से फिरते
दरिन्दे छुप गए हैं झाड़ियों में
मगर डूबे पड़े हैं खाड़ियों में
न पूछो कुछ ग़रीबों के मकाँ की
ज़मी का फ़र्श है छत आस्माँ की
न पंखा है न टट्टी है न कमरा
ज़रा सी झोंपड़ी में मेहनत का स़मरा
अमीरों को मुबारक हो हवेली
ग़रीबों का भी है अल्लाह बेली

❖❖❖

राष्ट्र पिता गाँधी जी की हाजिर जवाबी

इदारा

ऑलइण्डिया कांग्रेस के 1925 ई0 के अधिवेशन में गाँधी जी अध्यक्ष थे, उनके प्रस्ताव पर सरोजनी नाइडू अगले साल के लिए अध्यक्ष चुनी गईं, उन्होंने अध्यक्षता का चार्ज देते हुए कहा ''अब यह बोझ मैं अपने कमज़ोर कन्धों से उतार कर (सरोजनी नाइडू की ओर इशारा करते हुए) उनके मज़बूत मगर खूबसूरत कन्धो पर डाल रहा हूँ।

प्रिन्स फ़िलिप्स की मंगनी राजकुमारी एलजिबथ से तै हुई तो गांधी जी बहुत खुश हुए और लार्ड माऊन्ट बेटन को ख़त लिखा– ''आपके भतीजे की शादी ब्रिटेन की होने वाली महारानी से तय पाई है, इसकी मुझे बेहद ख़ुशी है। ''इस मुबारक मौक़े पर मैं शादी का तोहफ़ा देना चाहूँगा, लेकिन यह तो सभी को मालूम है कि मेरे पास कुछ भी तो नहीं है''।

माऊन्ट बेटन ने उन्हें जवाब दिया ''आपके पास बेशक कुछ नहीं, लेकिन चरख़ा तो है बस उसी को खड़ खड़ाइये और उनके लिए कुछ बुन डालिए।

एक मूर्ति बनाने वाली महिला गाँधी जी के आश्रम में आई वह उनका स्टेचू बनाना चाहती थी, लेकिन गाँधी जी के पास समय नहीं था कि चैन से बैठें, एक दिन उसके दो ख़ूबसूरत लड़कों को देख कर वह बोले ''तुम्हें ईश्वर ने इतने खूबसूरत बच्चे प्रदान किए हैं, तुम फिर भी स्टेचू बनाना चाहती हो?

गाँधी जी जहां भी जाते, पत्रकार वहां पहुंच जाते थे, एक मरतबा एक पत्रकार ने उनसे पूछाः ''क्या आप यक़ीन रखते हैं कि मरने के बाद आप जन्नत में जाएंगे?'' जन्नत में जाऊँगा या जहन्नम में यह मैं नहीं जानता, मगर इतना ज़रूर जानता हूं कि जहां भी जाऊँगा वहां पत्रकार ज़रूर होंगे''।

गाँधी जी सफर के दौरान एक स्टेशन पर डिब्बे के दरवाज़े पर खड़े थे, रेलगाड़ी आगे बढ़ी तो झटके से उनके पैर की चप्पल नीचे गिर गई, उन्होंने फ़ौरन अपना दूसरा चप्पल भी बाहर फेंक दिया, साथियों ने हैरत से वजह पूछी तो उन्होंने जवाब दिया ''जिसे एक चप्पल मिलेगी वह उसके लिए बेकार होगी और जो मेरे पास रह गई है वह मेरे लिए बेकार थी, जिसको पहली चप्पल मिलेगी ढूंढेगा तो दूसरी भी मिल जाएगी''।

एक दफ़ा महात्मा गाँधी नियमानुसार रेलवे के तीसरे दर्जे में सफ़र कर रहे थे, उनके साथ अमरीका के प्रसिद्ध जर्नलिस्ट लूई फ़िशर थे, रास्ते में लूई फ़िशर ने गाँधी जी से प्रश्न किया ''क्या आपने तीसरे दर्जे के डिब्बे में सफ़र करने की क़सम खा रखी है?'' उस पर गाँधी जी ने संजीदा तन्ज़ करते हुए कहा ''क्या करूँ भारत की रेलों में चौथे दर्जे का डिब्बा ही नहीं होता''।

गाँधी जी साउथ अफ्रीक़ा से वापस बम्बई पहुँचे तो एयरपोर्ट पर पत्रकारों का जमावड़ा था, एक गुजराती पत्रकार ने अंग्रेज़ी में गाँधी जी से प्रश्न किया तो उन्होंने नार्मल लहजे में कहा ''आप भी हिन्दुस्तानी, मैं भी हिन्दुस्तानी, मेरी मातृ भाषा भी गुजराती आपकी मातृ भाषा भी गुजराती फिर आप मुझ से अंग्रेज़ी में प्रश्न क्यों कर रहे हैं? अगर आपका ख़्याल है कि मैं साउथ अफ्रीक़ा

में रह कर अपनी मातृ भाषा भूल गया हूँ तो यह आपकी ग़लत फ़हमी है।''

महात्मा गाँधी से एक मारवाडी मिलने आये जो बड़ी पगड़ी बाँधे हुए थे, सेठ साहब ने बापू से प्रश्न किया, बापू आपके नाम पर लोग देश भर में गाँधी टोपी पहनते हैं, लेकिन आप उसका इस्तेमाल नहीं करते– बापू ने मुसकराते हुए जवाब दिया, सेठ जी आपकी पगड़ी से कम से कम बीस टोपियाँ बन सकती हैं, जब बीस टोपियों के बराबर का कपड़ा आप जैसे साहिबे हैसियत लोग अपनी पगड़ी में लगाते हैं तो बेचारे उन्नीस आदमियों को तो नंगे सर ही रहना पड़ेगा।

पूना में आग़ा खाँ के महल से नज़र बन्दी से छूटने पर पंडित मदन मोहन मालवीय ने महात्मा गाँधी को मुबारकबाद का तार भेजा और लिखा ''ख़ुदा से पूरी उम्मीद है कि आप सौ साल तक जिएंगे और मादरे वतन और बनी नव–ए–इन्सान की खिदमत करते रहेंगे''–

गाँधी जी हमेशा कहा करते थे कि वह एक सौ पच्चीस साल तक ज़िन्दा रहेंगे, यह तार मिलने पर उन्होंने लिखा ''बयक जुंबिशे क़लम आपने मेरी मुतवक़्के उम्र से पच्चीस साल घटा दिये अब जो ऐसा किया ही है, तो यह पच्चीस बरस का ख़ुद अपनी उम्र में इज़ाफ़ा कर लीजिए''।

❖❖❖

पृष्ठ...31...का शेष

लाखों लोगों ने इस्लाम धर्म कुबूल किया। दरअसल इस्लाम तलवार से नहीं बल्कि सद्व्यवहार से फैला और उसकी खुशबू में ऐसी मदहोशी है कि जिसने भी उसकी महक को पाया उसी का हो कर रह गया।

बहरहाल जब राजा का सिपाही भेष बदल कर ख़्वाजा की महफिल में पहुंचा तो हज़रत ख़्वाजा ने तुरन्त ताड़ लिया कि वह क्या करने आया है, तुरन्त उसे पुकारा और कहा कि अरे भाई! कहां इतनी दूर बैठे हो, इधर पास आओ। वह बड़ा सकपकाया कि कहीं भाँप तो नहीं लिया, उसके माथे पर पसीने की बूंदें उभरने लगीं। चूंकि ये संवेदनशील समय था तो कुछ न कहा और आगे बढ़ कर उनसे थोड़ी दूरी पर बैठने लगा। हज़रत ने कहा, नहीं एकदम पास में बैठो। लोगों को हैरत हुई कि ये कौन है जिससे हज़रत इतना लगाव रख रहे हैं। थोड़ी देर लोग उसकी ओर देखते रहे फिर उनका रुख दूसरी ओर हो गया। एक समय ऐसा आया कि एक भी आदमी उसकी ओर देख नहीं रहा था। हज़रत ख़्वाजा ने उसके कान में कहा, मौका अच्छा है, कब तक प्रतीक्षा करोगे, खन्ज़र निकालो और मेरा काम तमाम कर दो। हज़रत तो इतना कह कर चुप हो गए मगर उसकी हालत तो ये थी कि काटो तो खून नहीं। डबडबाई आँखों और काँपते हाथों से खन्ज़र निकाला और सामने रख दिया, फिर लरज़ते हुए बोला, महात्मा जी! इससे मेरा काम तमाम कीजिए, जवाब मिला नहीं, मेरे दोस्त! मैं सजा और बदला नहीं लेता। वैसे भी तुमने कोई अपराध नहीं किया है।

किताबों में है कि वह सिपाही शर्मिन्दगी की जंजीरों में जकड़ा किसी प्रकार घर पहुंचा और चिन्तन मनन के बाद तौबा की और इस्लाम धर्म कुबूल कर लिया।

❖❖❖

डायबिटीज़ (मधुमेह)

इदारा

आज के समय में डायबिटीज़ होना बहुत ही आम बात है। डायबिटीज़ में लंबे समय तक रक्त में शर्करा का स्तर ज़्यादा रहता है। रक्त में शर्करा का स्तर उच्च रहने के कारण बार बार पेशाब आने, प्यास लगने और भूख में वृद्धि होने की समस्या होने लगती है। डायबिटीज़ के कारण व्यक्ति का अग्न्याशय *(Pancreas)* पर्याप्त मात्रा में इंसुलिन का उत्पादन नहीं करता है। अगर यह स्थिति लंबे समय तक रहती है तो रोगी को अनेक तरह की बीमारियाँ होने की संभावना रहती है।

मधुमेह एक ऐसी बीमारी है जिसमें अगर समय रहते इलाज नहीं किया जाए, तो व्यक्ति को बहुत सी स्वास्थ्य समस्याएं हो सकती हैं। पहले इसे बुज़ुर्गों की बीमारी माना जाता था, लेकिन आज कल जवानों और बच्चों को भी प्रभावित कर रही है। इसे ''साइलेंट किलर'' भी कहा जाता है क्योंकि उसके लक्षणों को आसानी से पहचाना नहीं जा सकता।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में दुनिया भर में 42.3 करोड़ लोग मधुमेह के शिकार हैं। इनकी संख्या में बीते 40 वर्षों में चार गुना वृद्धि हुई है। केवल 2016 में लगभग 16 लाख लोगों की मौत मधुमेह के कारण से हुई थी।

नेशनल लाइब्रेरी ऑफ मेडिसिन की रिपोर्ट के अनुसार 20 से 79 वर्षीय लोगों की होने वाली सौ मौतों में से एक में मधुमेह का योगदान होता है। इससे बचने के लिए स्वस्थ जीवन शैली को अपनाना महत्वपूर्ण है। यह सही आहार, नियमित व्यायाम और तनाव कम करने के माध्यम से संभव है इस तरह आप मधुमेह से बच सकते हैं। अगर आपको लगता है कि इस बीमारी के शिकार हो सकते हैं तो तुरन्त डॉक्टर से सलाह लेना चाहिए ताकि सही उपचार शुरु किया जा सके।

एक अध्ययन के अनुसार 20 से 79 वर्ष के बीच के लोग तेज़ी से मधुमेह का शिकार हो रहे हैं। एक रिपोर्ट बताती है कि वर्ष 2021 में विश्व भर में 537 मिलियन लोग इस बीमारी से प्रभावित थे, और यह ऑकड़ा 2030 तक 643 मिलियन तक जा सकता है। साथ ही वर्ष 2045 तक यह ऑकड़ा 783 तक पहुंचने का अनुमान जताया गया है एक और रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2019 में मधुमेह के कारण हुई 1.5 मिलियन मौतों के मामलों में 70 वर्ष से कम उम्र के लोगों का ऑकड़ा 48 फ़ीसद था, इससे यह बात साफ़ हो जाती है कि मधुमेह की बीमारी नये युग के लोगों को तेज़ी से अपनी चपेट में ले रही है, जो आने वाले दिनों में बड़ा ख़तरा है।

टाइप–1 और टाइप–2 डायमिटीज़ में अन्तरः–

टाइप–1 मधुमेह की बीमारी तब पैदा हो जाती है, जब शरीर में इंसुलिन का उत्पादन कम हो जाता है, यह आमतौर पर माता पिता से विरासत में मिलती है। यदि उनमें से किसी को टाइप–1 मधुमेह है। इसके अलावा आपकी आहार और जीवन शैली भी इसे प्रभावित कर सकती है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के

अनुसार वर्ष 2017 में टाइप–1 मधुमेह वाले मरीज़ों की संख्या 9 करोड़ से अधिक थी और इसमें अधिकांश लोग उन देशों में रहते थे जिनकी आर्थिक स्थिति बेहतर थी। टाइप–1 मधुमेह के लक्षण तेज़ी से दिख सकते हैं और इसका उपचार इंसुलिन के साथ किया जाता है।

इसके अलावा टाइप–2 मधुमेह में इंसुलिन का उपयोग ठीक से नहीं होता और लक्षण हल्के हो सकते हैं। जो समय से पहले पता नहीं चलते। यह बीमारी शरीर में इंसुलिन का सही तरीक़े से उपयोग करने से रोकती है और अक्सर यह व्यस्कों में होती है, लेकिन आज कल यह बच्चों में देखी जा रही है। टाइप–2 मधुमेह के लक्षण प्यास, थकान, वज़न का बढ़ना या कम होना शामिल हो सकते हैं। इसे प्रबंधित करने के लिए उचित आहार, व्यायाम और दवाओं का सही संयोजन करना आवश्यक होता है।

बचाव के लिए क्या करें:–

मधुमेह से बचाव के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि आप अपनी जीवन शैली में सुधार करें। सही समय पर खाना खाएं, ठीक से सोएं और नियमित रूप से शारीरिक व्ययाम करें। और मादक पदार्थों से दूर रहें।

❖❖❖

पृष्ठ....34...का शेष

इस्लाम ने औरत के लिए महर और विरासत के ज़रिये दौलत का इंतिज़ाम करके दरअस्ल उसके लिए बाइज़्ज़त ज़िन्दगी का इंतिज़ाम किया है।

महर और विरासत से जुड़ी कुरआनी तालीम और नबी सल्ल0 के ज़माने की मिसालें तक़ाज़ा करती हैं कि मुसलमान औरतें समाज की ग़लत पाबंदियों से आज़ाद हों। विरासत में अपना हक़ वसूल करें और महर भी पूरा पूरा वसूल करें। अपना हिस्सा या अपना महर माफ़ करने का ख़याल दिल में उसी समय लाएं जब कि वे खुद बहुत खुशहाल हों और जिसके हक़ में माफ़ करना चाहती हों वह तंगहाल हो और उनका दिल खुशी–खुशी उनकी मदद करने के लिए आमादा हो। याद रहे कि सहाबा किराम के ज़माने में हर औरत अपना महर भी हासिल करती थी।

मौजूदा माहौल में जब एक औरत महर और विरासत को अपनी मिल्कियत में शामिल करती है तो वह महर और विरासत के इस्लामी निज़ाम को ज़िन्दा करने में अहम रोल अदा करती है। जब कि समाज के दबाव में आ कर मॉफ़ करने वाली औरतें जाहिलियत के इस दबाव को और मज़बूत करने का कारण बनती है। मर्दों के बीच यह मुहिम चलाना जितना ज़रूरी है कि वह औरतों को उनका महर और विरासत में उनका हिस्सा अदा करें, औरतों में ये मुहिम चलाना भी इतना ही ज़्यादा ज़रूरी है कि वह महर और विरासत में अपना हिस्सा वसूल करें। यह अजीब बात है कि कोई भाई अपना हिस्सा बहन को नहीं देता और हर बहन अपना हिस्सा भाई के हक़ में छोड़ देती है।

दौलत कम हो या ज़्यादा, बहरहाल इससे इन्सान खुद को ताक़तवर महसूस करता है और ज़िन्दगी के अपने तसव्वुर के मुताबिक अपना रोल अदा करने की बेहतर पोज़ीशन में होता है। मुस्लिम औरतों के पास अगर ज़िन्दगी का आला तसव्वुर हो और साथ में माल व दौलत भी हो, तो वह अपनी आख़िरत के लिए ज़्यादा सामान कर सकेंगी, दीन की ज़्यादा ख़िदमत कर सकेंगी और अपनी पूंजी को बढ़ाने की बेहतर तदबीरें भी कर सकेंगी।

❖❖❖

अंतर्राष्ट्रीय समाचार

अबू मोहम्मद आमिर नदवी

जॉर्डन द्वारा गाजा में प्रतिदिन 500 सहायता ट्रक भेजने की घोषणा:-

अम्मान (एजेंसियां) जॉर्डन के विदेश मंत्री ऐमन सफदी ने गुरुवार को घोषणा की कि जैसे ही इसराईल नाकाबंदी हटाएगा उनका देश गाजा में हर दिन 500 से अधिक सहायता ट्रक भेजने के लिए तैयार है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के समक्ष अपने भाषण के दौरान सफदी ने कहा कि सुरक्षा परिषद को गाजा में युद्धविराम पर बाध्यकारी निर्णय लेना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसराईल को रफह पर हमला करने और क्षेत्र में फंसे 15 लाख से अधिक फिलिस्तीनियों के खिलाफ एक नया नरसंहार करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। उन्होंने बताया कि सुरक्षा परिषद द्वारा इसराईल को मानवीय सहायता के लिए सभी क्रॉसिंग खोलने के लिए बाध्य करने का निर्णय नहीं लेने का कोई औचित्य नहीं है। अल–सफदी ने जोर दे कर कहा जॉर्डन स्वयं को युद्ध का मैदान नहीं बनायेगा।

जॉर्डन के विदेश मंत्री ने कहा कि फिलिस्तीन में, इसराईली उग्रवाद क्रूरता की सारी हदें पार कर चुका है और अन्याय से परे चला गया है उन्होंने जोर देकर कहा इसराईल जितना चाहे जुल्म करले, लेकिन आज़ादी के लिए फलस्तीनी अवाम की भावनाओं को खत्म न कर सकेगा।

अमेरिकी वैज्ञानिक ने इस्लाम कुबूल किया:-

वाशिंगटन (एजेंसी) अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अमेरिकी वैज्ञानिक प्रोफेसर हेनरी ने इस्लाम कबूल कर लिया। अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त अमेरिकी वैज्ञानिक प्रोफेसर हेनरी को डॉ0 अहमद हसन बट्टल ने अब्दुल हक नाम दिया है क्योंकि सत्य और ज्ञान उनके लिए ईश्वर तक पहुँचने का साधन बने। रिपोर्ट के मुताबिक, उन्होंने रमजान का पहला रोजा भी रखा, तरावीह की नमाज़ भी पढ़ी और जल्द ही उमरा के लिए रवाना होंगे। डॉ0 हेनरी स्टेम सेल मेडिसिन में दुनिया का अग्रणी नाम हैं और सबसे प्रमुख वैज्ञानिकों में से एक माने जाते हैं, प्रोफेसर डॉ0 हेनरी प्रसिद्ध अमेरिकी विश्वविद्यालय, हार्वर्ड में प्रोफेसर हैं। वह वंशानुगत अंधेपन के इलाज के लिए एक स्टेम सेल दवा के आविष्कारक हैं, जिसे हाल ही में अमेरिकी खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा तीसरे चरण के लिए मंजूरी दी गई थी।

5 साल में 403 छात्रों की विदेश में मौत:-

पी0टी0आई0 नई दिल्ली– सरकार ने शुक्रवार को कहा कि दुर्घटनाओं और मेडिकल समेत कई कारणों से 2018 से विदेश में 403 भारतीय छात्रों की मौत हुई है। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने लोकसभा में एक प्रश्न के जवाब में यह जानकारी दी। उन्होंने सदन में जो आँकड़ें रखे, उसके अनुसार भारतीय छात्रों की मौत के सबसे अधिक 91 मामले कनाडा से रहे। इसके बाद ब्रिटेन में 48 मामले सामने आए। रूस में 40, अमेरिका में 36, ऑस्ट्रेलिया में 35, यूक्रेन में 21, और जर्मनी में 20 भारतीय छात्रों की मौत हुई। जयशंकर ने कहा कि विदेश में भारतीय छात्रों का कल्याण सर्वोच्च प्राथमिकताओं में से एक है।

❖❖❖

नदवतुल उलमा
पोस्ट बाक्स न0 93, टैगोर मार्ग,
लखनऊ -226007 (भारत)

ندوۃ العلماء
پوسٹ بکس ۹۳- ٹیگور مارگ
لکھنؤ- ۲۲۶۰۰۷ (الہند)

दिनांक 01/05/2024 तारीخ

अहले ख़ैर हज़रात से !

अल्लाह तआला का शुक्र व एहसान है कि दारुल उलूम नदवतुल उलमा, हज़रत मौलाना सैय्यद बिलाल अब्दुल हई हसनी नदवी दामत बरकातुहुम, नाज़िम नदवतुल उलमा की सरपरस्ती में अपनी इल्मी, दीनी, तालीमी व तरबियती ख़िदमत अंज़ाम दे रहा है, और उन बहुमूल्य सिद्धान्तों को सीने से लगाए हुए है जिनके लिए नदवतुल उलमा को स्थापित किया गया था यानी नये ज़माने में इस्लाम की प्रभावी और सही व्याख्या, दीन और दुनिया तथा इल्म और रूहानियत को यकज़ा करने की कोशिश, दीन से दूरी और नफ़रत को ख़त्म करने के प्रयास, इस्लाम पर विश्वास और इस्लामी उलूम की बलन्दी और विशेषता के ऐलान, दीने हक़ से वफ़ादारी और शरीअ़त पर मज़बूती से जमने के सिद्धान्तों पर कायम है।

आप से हमारी दरख़्वास्त है कि वक़्त की इस ज़रूरत और दारुल उलूम नदवतुल उलमा की इफ़ादियत, (उपयोगिता) को समझते हुए पूरी फ़य्याज़ी और फ़राख़दिली और हिम्मत से काम ले कर इन तमाम कामों में भरपूर मदद फ़रमाएं कि हिन्दुस्तान में दीन के क़िलों की हिफ़ाज़त की इससे बेहतर कोई शक्ल और इससे ज़्यादा मज़बूत कोई सदक़–ए–जारिया नहीं।

लिहाज़ा आप हज़रात से गुज़ारिश है कि अपने सदक़ात अतियात, चेक या ड्राफ़्ट के ज़रिये और ऑन लाइन नदवतुल उलमा के निम्नलिखित एकाउन्ट में ट्रान्सफ़र फ़रमायें, ऐसे नाज़ुक और मुश्किल हालात में आपका सहयोग बहुत ही अहमियत रखता है। अल्लाह तआला हम सबकी कोशिशों को क़ुबूल फ़रमाए और उनको हमारे लिए आख़िरत का ज़ख़ीरा बनाए।

आमीन।

मौलाना जाफर मसऊद हसनी नदवी
नाजिरे आ़म नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) तक़ीउद्दीन नदवी
मोतमद तालीम नदवतुल उलमा

डॉ0 मुहम्मद असलम सिद्दीक़ी
मोतमद माल नदवतुल उलमा

(मौलाना डॉ0) सईदुर्रहमान आज़मी नदवी
मोहतमिम नदवतुल उलमा

नोटः चेक/ड्राफ्ट पर केवल यह लिखें:
NADWATUL ULAMA
और इस पते पर भेजें:
NAZIM NADWATUL ULAMA
Nizamat Office, Nadwatul Ulama.
Tagore Marg, Lucknow-226007 (UP)
WEBSITE: WWW.NADWA.IN
Email : nizamat@nadwa.in

SCAN HERE TO VISIT THE WEBSITE FOR DONATION

नदवतुल उलमा
A/C No. 10863759711 (अतिया)
A/C No. 10863759766 (ज़कात)
A/C No. 10863759733 (तअ़मीर)
SBI MAIN BRANCH, LUCKNOW
(IFSC: SBIN0000125)
ONLINE DONATION LINK
https://www.nadwa.in/donation

UPI करते समय रिमार्क में मद (अतिया/ज़कात/तअ़मीर) अवश्य डालें।

बरा–ए–करम अतियात भेजने के बाद रसीद हासिल करने के लिए नं**08736833376** पर इत्तिला ज़रूर करें।

नोटः नदवतुल उलमा, लखनऊ को दिये गये चन्दे को **Section 80G income Tax act 1961**के तहत छूट प्राप्त होगी।

Online Donation Link: https://www.nadwa.in.donation/Website: www.nadwa.in, Email: nizamat@nadwa.in

RNI No. UPHIN/2002/07945
Regd. No. SSP/LW/NP-491/2024 To 2026
Dispatch Date :1 & 5
Published of 27th Advance Month
Dispatch: R.M.S Charbagh, Lucknow

MONTHLY
SACHCHA RAHI
Vol. 23 - Issue 03

Office Timing : 7:30 AM To 1:15PM
Tel.:(0522) 2740406
ISSN No. : 2582-4007
http://sachcha-rahi.nadwa.in
E-mail: sachcharahi2002@gmail.com

RK JEWELLERS
Renowned Name in Jewellery

Haji Abdul Rauf Khan
Haji Mohd. Faheem Khan
Mohd. Owais Khan

Shop : Sarai Bans, Akbari Gate,
Chowk, Lucknow - 226003
Ph.: 0522-2267910
+91-9415108039

R.K. Clinic Research CENTRE

R. K. CLINIC
& RESEARCH CENTRE
Dr. Mohammad Fahad Khan
M.D.
विशेषज्ञ
पेट एवं उदर रोग, श्वास एवं चेस्ट रोग, एण्ड्रोक्रायोनोलोजी एवं मधुमेह रोग
24 HOURS EMERGENCY SERVICES AVAILABLE
G-1, Aman Apartments, Chaupatiyan, Opp. Power House, Lucknow
Ph.: 0522-2651950, 9415006983

Printed & Published by Mohammad Taha Athar, Tagore Marg, Badshah Bagh, Lukcnow - 7
on behalf of Majlis-e-Sahafat-wa-Nashriyat at Kakori Offset Press, BN Varma Road, Lucknow - 3